समय सरगम

कृष्णा सोबती

एक

खिड़की का परदा तेज हवा में लहराने लगा था।

क्या आँधी आने को है!

जाड़े में आँधी!

न...न...नहीं!

हाथ बढ़ा परदा ग्रिल में खोंस दिया। बाहर देखा। दुपहर की चमकीली पतली धूप हवा के झोंकों में लहराती थी।

दूर सामने हुमायूँ का मकबरा अपने गुंबद के गोलार्द्ध में स्थित समय की धूप सेंक रहा है। सरदी की यह धुपैली गरमाहट हल्के-से कपड़ों को छू रही है। जीने की अनंत नाटकीयता—वह भी इतने विशाल मंच पर! यह धरती, आकाश, सूरज, हवाएँ और हम!

मंच पर अभिनीत होना अभी कुछ बाकी है क्या।

सहसा आरण्या की साँस तेज हो गई। आँखों में रात का सपना घूम गया। क्या दृश्य!

आकाश में कहीं ऊँचा-सा कपाट दीखा था। लकड़ी की चौखट में खूब बड़ा दरवाजा जड़ा था। और, उस पर लगी थी आरण्या की नाम-पट्टिका।

दरवाजे में छोटा-सा कपाट खुला और अंदर से दीखा एक जाना-पहचाना चेहरा।

कौन!

यह तो मैं ही हूँ। मैं ही अंदर से झाँक रही हूँ।

नहीं...नहीं...ऐसे कैसे! मैं तो बाहर खड़ी हूँ न!

ठीक से देखो आरण्या, क्या यह झुर्रियोंवाला मुखड़ा तुम्हारा नहीं है?

है तो! पर ऐसा होने से क्या हुआ! हम तो हर पल बड़े होते रहते हैं न!

हाँ। पर जान रखो—इस चेहरे पर सताई हुई रेखाएँ नहीं। समय के साथ उगी पकी हैं। अपने वक्त को खुद जीया है।

इतना संतोष! फिर यह प्रश्नोत्तर कैसे! क्या कपाट को चीन्ह रही हो। तुमने ही तो घड़ा है इसे जीकर!

आरण्या ने अपने दोनों हाथ एक-दूसरे में गूँथ लिये।

अंतराल के बाद खोले, बालों को छुआ कि अपने में अपनी निकटता सरसराने लगी।

कुछ परेशानी है क्या!

नहीं। हवा पी रही हूँ। आत्मा तक खींच रही हूँ ऑक्सीजन! खुश हूँ कि जीवित हूँ। अपने साथ के तो कब के जा चुके।

वे चेहरे, नहीं, भूल जाओ उन्हें। नमस्कार कर दो उन्हें। जीवित और मृतकों की जातीय स्मृतियाँ बदल गई हैं। वह एक-सी नहीं हैं।

ओह! संतुष्ट हूँ कि जीवित हूँ।

आरण्या ने कमरे में नजर फिराई। मेज पर पड़े फल रंग-रूप-गंध से अपनी ओर खींचने लगे।

चमत्कृत!

प्लेट और छुरी उठाई और इत्मीनान से फल छीलने लगी। फल की फाँकों के साथ प्याला उमगने लगा। नीबू निचोड़ा, नमक डाला, थोड़ी काली मिर्च भी।

चखा और एक चम्मच-भर चीनी ऊपर से बुरक दी।

भूल जाओ उस सपने को। मजा लो फलों की तरावट का! अभी सब कुछ कल का-सा ही है। अपनी धुरी पर टिका है। हिल भी जाए तो भी क्या! वक्त है। अंतिम पड़ाववाली भूमिका कभी भी पास आ खड़ी हो सकती है। होगी। उसे होना है। सबकी होती है।

तुम उसकी चिंता कर रही हो! जिस डोर की चरखी ऊपरवाले बुलंद दरवाजे पर टँगी है, उसे भला यहाँ क्यों ढूँढ़ रही हो! क्या डर रही हो! भयभीत हो!

हाँ और नहीं, दोनों ही।

जब तक हो आराम करो। मौसमों का सुख लो। ऐसी हवाएँ कहीं और नहीं। चाँद पर भी नहीं।

हल्के मन फोन उठा ईशान का नंबर मिलाया। देर तक बजता रहा। घंटे-भर बाद फिर से नंबर मिलाया। बजा और उठा लिया गया।

हैलो!

हैलो, मैं रख देने को थी। सोचा आप आराम में होंगे।

आज टॉयलेट की सफाई का दिन था। वही करके आ रहा हूँ। हाँ, शाम को पार्क चलने का इरादा है क्या!

चल सकूँगी! कितने बजे?

ठीक साढ़े चार! फाटक पर ही मिलेंगे।

आरण्या को कुछ हड़बड़ाहट हुई। सैर को जाने से पहले आराम जरूरी है।

थकन-सी हो रही है! सुबह विटामिन लेना भी भूल गई थी!

लेटे-लेटे सोचा, घड़ी की सुइयों में से जाने कितना कुछ निकाल पाते हैं हम!

ईशान घड़ी के आतंक में वहीं नजर टिकाए रहते हैं और मैं उससे आँखें चुराए रहती हूँ।

भला तुलना क्यों! अपने-अपने कदमों की रफ्तार है।

ठीक चार पच्चीस पर आरण्या नीचे पहुँच गई।

कलाई देखी।

बिलकुल वक्त से हूँ। घड़ी के चंगुल में से निकल जाना आसान नहीं। खास तौर

पर जब इस सयानी की कभी ताली गुम हो, कभी पर्स, कभी जरसी। कभी यह दुविधा हो कि हल्का पहने या भारी। भारी से चलना मुश्किल होगा। हल्का पहनो तो सरदी लगने का खतरा।

पुराना जिस्म।

सड़क पर चलते हुए किसी दूसरे की निगाह से अपने पर नजर डाली। चुस्त-दुरुस्त! कपड़े न ज्यादा गर्म न ठंडे। अपना भार उठाने को सुखकर।

सड़क के किनारे-किनारे कीकरों की लंबी पाँत झिलमिली-सी बनी धूप में लहराती झूल रही है। पक्के बाँध तले सरसों के लंबे-चौड़े खेत! छोटे मँझोले पौधे धूप और हवा को अपने में खींचने में मस्त।

सड़क का ट्रैफिक इन सबसे बेखबर तेज गति से भागा चला जा रहा है।

ईशान ने गाड़ी पार्क की।

दोनों पार्क के प्रवेश-द्वार की ओर बढ़ चले। कतार में खड़े ऊँचे युक्लिपटस जाने क्यों अपनी ऊँचाइयों में भी अनमने दीखते थे। पार्क के बाहर खड़े हैं, शायद इसीलिए। दाईं पटरी पर रोड़ी और बजरी की ढेरियाँ। हैज के साथ-साथ पार्क को घेरे हुए कँटीली तार जमीन पर पसरी है। यहीं से दाखिल हो रही है पार्क में एक छोटी-सी सँकरी पगडंडी।

ढलान है, जरा सँभलकर, फाँद लेंगी न!

जी हाँ।

एक साथ दो जोड़ी शू सतर्क हुए और सावधानी से पार्क के अंदर पहुँच गए।

लाल टाइल्स की लंबी रौस। अशोक के हरियाले पेड़ों से घिरी है। किंगरी की तरह साथ-साथ जाती फूलों की क्यारियाँ। छोटे-छोटे नन्हे फ्लॉक्स—लाल, गुलाबी, बैंजनी, सफेद।

सामने लतरों के झुरमुट। बुगनबेलिया की गुच्छीली चटक बेलें। चटक लाल गुलाबी। ब्राजीलियन पाम। जातिमान। पीछेवाले, छोटी जात के अलग खड़े हैं।

पार्क में भी बाँट! मंडल राजनीति ही तो!

हरे जाजम का-सा घास! अपने हरे-भरे की सुरक्षा इसका धर्म है! रंगों का छिड़काव भी इसे अस्वीकार नहीं!

गोलाकार क्यारियों में कैसे रंग-बिरंगे फूल! बिना खुशबू के भी इतराते। गुटकने मोरपंखी पौधे अपने परिवार में गुँथे जुड़े। सजीले पत्तों से बुने हुए। इनके सामने तो संगमरमर का चौंतरा चाहिए था। इनकी छब-छटा ही कुछ और होती।

ऊँचाई पर छाँह-घर में बैठे बतिया रहे हैं बूढ़े वरिष्ठ नागरिक। घर-परिवार से बाहर हो रहा है उनका सार्वजनिक संवाद। बीती हुई उम्र का अर्जित एकांत! बस इतना ही।

ईशान और आरण्या मोड़ पर रुके।

यहीं से घूमने के लिए अलग-अलग दिशा को बढ़ जाएँगे।

ठीक छः बजे हम लौटकर यहीं मिलेंगे।

आरण्या पार्क के बाईं ओर बढ़ गई। वीपिंग विल्लो की नीचे लटकती टहनियाँ। बीच में झमकते लाल-लाल ब्रश। आगे सागवान के पेड़ों की लंबी कतारें।

संझाती धूप में पार्क दीख रहा है किसी छवि-संग्रह जैसा। हवा की चक्की धीरे-धीरे घूम रही है। पवन-ऊर्जा! पेड़ों के पीले मुकुट हवा की लहरों में जगमग-जगमग।

मस्जिद के आगे पेड़ शांत हैं। अपनी-अपनी मनचली शाखाओं से लदे। पाखियों के झुंड जाने क्या-क्या संवाद कर रहे हैं। मालूम नहीं, इस शोर का भुगतान भी कौन करेगा। भला ट्रैफिक-शोर से इसकी क्या प्रतिस्पर्धा। पेट्रोल खर्च होता है तो पहिए गतिमान होते हैं। यहाँ बिना किसी टैक्स के ही चैनल तरंगित हैं।

कहीं यह भी मूक वृक्षों का आंदोलन तो नहीं!

किसके खिलाफ होगा! क्या लतरों के विरुद्ध जो इनसे लिपट-लिपट जाती हैं?

नहीं, यह पेड़ हम दोपायों के विरुद्ध हैं। शायद हमारी मनमानियों से खीझ गए हैं।

पाखियों की टुकड़ियों पर भी कोई अंकुश नहीं।

चिड़ियों को देखो, चुग-चुग चीं-चीं करती रहती हैं। सयाने पेड़ों को खूब सताती हैं। जमकर शोर मचाती हैं। करती हैं पूरी तानबाजी। बूढ़े पेड़ चुप हुए रहते हैं। नहीं बोलते। आत्मिक हैं पूरे। नहीं-नहीं, घुन्ने हैं। चुपचाप जासूसी करते रहते हैं। सहसा सामने से एक नीलकंठ फुर्र से उड़ गया। वाह, क्या पंख और क्या उड़ान! घास की नन्ही-मुन्नी पत्तियाँ हवा में हिलोरें लेने लगीं। आरण्या तेज-तेज कदमों से लगभग दौड़ने लगी। पाँव तले उखड़े पत्थर का खटका लगा। नीचे से टाइल उखड़ी हुई थी। सँभलकर! गिरोगी। कम पुरानी नहीं हो। दुर्घटना कभी भी हो सकती है।

याद आया। मेडिकल इंश्योरेंसवाला कागज। सँभालकर रखा है न! रखा कहाँ है, यह याद नहीं। घर लौटते ही ढूँढ़ना होगा।

आरण्या को दौड़ते देख कुछ टहलती आँखें अचरज से देखने लगीं। इस उम्र में यह रफ्तार। चाल अपने आप धीमी हो गई।

घड़ी देखी।

दूर दीखते खाली बेंच को आँखों से आरक्षित किया। वहीं पहुँचकर सुस्ताएगी। लॉन में पानी लगा है। जूते-मोजे उतार हाथ में ले लिये और गीले लॉन को तिरछे काटते हुए गंतव्य पर पहुँच गई।

बैठे-बैठे देखा—लतरें, शाखें, टहनियाँ सब गहराने लगी थीं। पतली धूप में जो जलरंग दीखते थे, अब लगने लगे हैं गहरे तैलरंग। ऊपरवाले के पास तो असीम स्वतंत्रता है। उसने ब्रह्मांड में बेहिसाब प्रयोग किए हैं। हर चीज, हर शै का अलग-अलग स्वभाव, गुण, आकृति।

पेड़ लता से, फूल पत्ते से, हिरण चीते से, चीता खरगोश से, तितली मोर से, मोर कव्वे से, कव्वा चिड़िया से, आदमी शेर से, शेर बच्चे से, बच्चा माँ से, माँ पिता से।

अनोखा अनुपम संसार ऊपरवाले का, उसका, हमारा और हम सबका!

सामने पैदल पथ पर ईशान चले आ रहे हैं।

आरण्या मोजे पहनने लगी।

क्या जूते काट रहे हैं?

नहीं। घास गीली थी और जूते बचाने जरूरी थे। सो हाथ में पकड़ लिये।

ईशान हँसे।

जूते बचाने के लिए सरदी पकड़ने में भी भला क्या तुक! एंटीबायटिक्स तक खाने पड़ सकते हैं।

आरण्या हँसी।

उनसे पहले मैं काली मिर्च, तुलसी और मुलट्ठी का काढ़ा पिऊँगी।

अच्छी आदत है। बहुत ज्यादा दवा लेना ठीक नहीं।

मतलब यह निकला कि गीली घास पर चलना मुझ जैसे पुराने नागरिक के लिए ठीक नहीं!

हाँ आरण्या, पुराने नागरिकों को इस तरह की लापरवाहियाँ बहुत महँगी पड़ सकती हैं।

सही कह रहे हैं। आगे के लिए सैर में सिर्फ एक्शन शू।

इसके साथ एक और टुकड़ा जोड़ दें, नहीं तो किसी शू कंपनी के विज्ञापन का-सा सुन पड़ेगा।

नहीं, आज की-सी शाम का समापन किसी विज्ञापन पर उचित नहीं।

तो आध्यात्मिक संवाद ही हो जाए।

आरण्या, क्या यह शब्द है आपके कोश में।

लगता तो नहीं। अपना कुल धर्म अधिकारों की लड़ाई है और आपका ज्ञान प्रज्ञा से जीवों में सुलह-सफाई है।

हूँ। मौखिक द्वंद्व का संकेत दे रही है चाल आपकी। मुठभेड़ के लिए तैयारी है क्या?

बहुत आक्रामक लग रही हूँ क्या? वैसे तो अंतर्मन की क्रियाएँ पाँवों में थिरकने ही लगती हैं।

अनुशासन–

हाँ, अपने पास भी है। आपके पास शास्त्र है और अपने पास शस्त्र।

आप ही विभाजन कर रही हैं।

पूरा देश उलझा है जातीय स्मृति की खलबली में! मैं द्विज हूँ, मैं अब्राह्मण हूँ। मैं क्षत्रिय, मैं राजपूत, मैं अराजपूत, मैं जाट-गूजर, मैं कमजोरवर्गी, मैं दलित, मैं अनुसूचित।

ठहरिए-ठहरिए, भारतीयता कहाँ हैं?

भारतीयता?

वह न्यायालय के तराजू में–

क्यों न विषय बदल लें!

चलिए, कल्पनातीत सुखों के नाम लेते हैं।

पहले आप की बारी।

मेरे सुखों की सूची बहुत ही संक्षिप्त है। एक पंक्ति में शब्दों के गुच्छे और अर्थों के मुखड़े। बस इतना ही। अब आप कहें–

कोई एक अच्छी कृति पढ़ पाने का सुख।

कुछ विस्तार करें–

अर्थों के पीछे से चमकता चैतन्य। चैतन्य ही मणिभ है। अपनी पारदर्शी चमक में मणिभ कभी फीका नहीं पड़ता।

व्यक्ति के संदर्भ में कह रहे हैं न!

हाँ, वही इस जीवन की परम अद्वितीयता है। एक संपूर्ण संरचना। अपने प्रति चैतन्य होना ही पुनर्रचना है। क्या ठीक कह रहा हूँ?

हाँ, समझ रही हूँ।

जितनी बार अपने को सँवारना, नया करना, उतनी बार पुनर्जन्म। चुपके से आरण्या ने अपने से पूछा–भला कितने जन्म हो चुके तुम्हारे अब तक।

अनेक! सचमुच अनेक जन्मों की तैयारी रही इस एक जन्म में।

ईशान ने लंबे मौन से उबारने को कहा–आपको कुछ कहना है। अब आपकी बारी है।

हो रहा है पुनर्जन्म इन दिनों भी। कागजों को फाड़कर। उम्र की भविष्यवाणी! क्या इस अनुभव के बीच से आप भी गुजरे हैं?

हाँ। कभी पुराने पत्र, कभी पुराने हिसाब, कैलेंडर और डायरियाँ। अपनी कहूँ तो कागजों के साथ-साथ स्मृतियाँ भी। शायद इसे ही निर्वाण कहते होंगे।

इतना स्पष्ट कहने का आग्रह भी क्यों?

इसलिए कि ठेठ गद्य को जीती हूँ।

दोनों गुलाब वाटिका की दीवार के साथ-साथ बढ़े।

इस वाटिका में तो जैसे काव्य-भाषा उग रही है।

पहले देख गई हूँ।

क्या आपने कोनेवाली काले नारंगी गुलाब की क्यारी में एक छोटी-सी साँवली गुलाब-पुत्रिका देखी।

नाम सुंदर है। गुलाब-पुत्रिका! इस पहचान में कहीं स्त्रीत्व का दबाव तो नहीं।

हो भी सकता है। पार्क का पुत्र-समाज तो बहुसंख्यक है। हमें अल्पसंख्यकों की भी चिंता है। इसीलिए इन पुत्रियों को पहचानना भी जरूरी है।

ईशान हँसे।

विवाद में यह मामला कहीं ज्यादा न उलझ जाए!

नहीं, ऐसा नहीं होगा। हम अपनी सौजन्यता को संकीर्णता में क्यों बदलेंगे! झगड़े हों या न हों, हम सयाने तो शांति को प्राप्त होंगे।

दोनों हँसते रहे।

इच्छा देवी तो अधिकारों का रास्ता वहाँ भी काट देगी।

संकेत समझ गई हूँ। उस अनंत शक्ति का सामना किए रहेगी।

ईशान हँसे। आपको वकील की जरूरत तो वहाँ भी पड़ सकती है।

वहाँ भी यही व्यवस्था होगी। फीस दी जाएगी तो पैरवी होगी। हाँ, फैसले के लिए एक युग तक लग सकता है।

उतने में तो कई शताब्दियाँ पार हो जाएँगी।

आरण्या खिलखिलाकर हँसी।

सुनने में अच्छा लग रहा है कि हम इतना लंबा अरसा जिएँगे। इतना बता दूँ कि मैं धीरज से प्रतीक्षा करूँगी। अपने अधिकार कैसे छोड़ूँगी भला!

सहसा दोनों ओर से शब्द गुम होने लगे और साँझ की आहटें मुखर हो उठीं।

पार्क का उजला हरित अब नीला दीखने लगा था। अँधेरे से पहले की शाम।

आपका मनचाहा रंग कौन-सा है?

काला है।

नहीं-नहीं। यह तो उल्लास का रंग नहीं।

क्यों नहीं! अपने गुलाबी काल में भी मुझे यही पसंद था। इन दिनों पहनती हूँ ग्रे और सफेद। यही दोनों मेरे आंतरिक को घेरे रहते हैं।

कुछ कदम खामोशी में खो गए। एकाएक आरण्या हँसी।

ऐसा न समझ लें कि ग्रे तक पहुँच ही गई हूँ। जीवितों की कई पवित्र इच्छाएँ होती हैं जो इस ग्रे के बाद भी बनी रहती हैं।

फाटक की ओर जाती सर्पाकार क्यारी। दोनों ने एक संग फलाँगी।

निःशब्द है समय, पर इसमें भी बहुत कुछ धड़क रहा है। और उम्र? वह बकरी बनी चर रही है, धीरे-धीरे। चरने दो। उस ओर मत देखो!

आरण्या ने अपने से चुपके से पूछा—आँखों को कम तो नहीं दीख रहा! कैमिस्ट से ड्रॉप लेना जरूरी है। डॉक्टर से कब का वक्त है भला!

सुना, ईशान कह रहे हैं—

लगता है मेरा दूर का चश्मा बदलने को है।

आकाश के गहरे नीले पर सूरज का सुनहला मुखड़ा। पार्क का पिछवाड़ा आकाश से जा मिला और पश्चिम का मुखड़ा आँखों में आ बसा। आत्मीयता से जैसे एक-दूसरे को कहते हैं—आज भी कल की तरह कल होगा। पर कल आजवाला कल नहीं होगा।

पश्चिम में सूरज धीरे-धीरे धरती के मंच की ओर सरक रहा है। अग्नि का लाल गोला। पीछे अँधियारे का विशाल परदा। लालिमा का क्षणांश पलकों में झिलमिलाता है और धरती में ओझल हो जाता है।

पेड़ अब पहले से ज्यादा खामोश हैं। अपनी अबोली ऊँचाई पर स्तब्ध। क्या अपनी निरंतरता में मुग्ध। और हम दो बुढ़ाते नश्वर।

छोटी टाइलों से अटा पैदल पथ नितांत नया-सा लगने लगा है। न पुरानी स्मृतियाँ,

न उलाहने, न स्पर्धा, न आक्रामकता, न नम्रता। सिर्फ साथ-साथ चल रहे हम दो हैं। चलना अच्छा है। डॉक्टर भी यही कहते हैं।

आरण्या ने अपने को घुड़का! बार-बार वहीं लौट रही हो! डॉक्टर।

पेड़ों के तनों को देखो। सुघड़ता से जमे हैं अपनी जड़ों से।

तुम कैसे चल रही हो और कहाँ देख रही हो! सुदृढ़ करो अपनी चाल को। यात्रा है अप्रत्याशित संयोजन की। गति का उतना ही सनातन स्पर्श जो अपने होने और जीने से उदित होता है। ग्रह-नक्षत्रों के हिसाब से नहीं, पैरों की चाप से।

वही। बयार उतनी-भर जितनी जीने की अवधि। कोई गुंजल तो नहीं। न पूर्वा, न उत्तरा, न दक्षिणा। हवाएँ तो कब की उड़ चुकीं अपनी-अपनी दिशाओं में। जो रह गए वह भी उड़ जाएँगे। मौसम का यही शुभ है। निरर्थक कुछ भी नहीं। सही वक्त पर सही को सही अर्थ देना होता है। देखो सामने। डूब चुका है सूरज और पेड़ों के बीच ताजा चाँद आसक्ति के पिंजरे में लटका हुआ। इसे देख सकना भी तो एक घटना है।

लिफ्ट घनिष्ठता से खुली और आरण्या अपने तल पर पहुँच गई। दरवाजा खोला, लाइट ऑन की और बालकनी में जा खड़ी हुई। जमुना-किनारे का चौड़ा विस्तार...बत्तियों की झालर से टँका। दूर-पास के अपार्टमेंट्स की खिड़कियाँ अपने-अपने शोर में चहकतीं-महकतीं। अपनी-अपनी बत्तियों से उजरातीं। खिड़कियाँ–खिड़कियाँ नहीं बदलतीं। बदलते हैं परदे, मुखड़े और तारीखें। अंदर जा जूते उतारे। पाँव धोए। टॉवल से पोंछे तो दूब की दो-चार पत्तियाँ तलवों से लगी पड़ी थीं।

आरण्या देखती रही। कितनी नन्ही। जतन से उन्हें चुना। इतनी बारीक छुअन!

गीली घास पर वह दौड़ अनोखी थी। इस शाम की यह प्राप्ति रही।

पानी डाल चाय की केतली लगा दी।

चाय का डिब्बा देखा, खाली।

टी बैग्स होंगे!

थे।

अकेलों का यही इंतजाम। चाय है तो चीनी नहीं, चीनी है तो दूध नहीं।

तरतीब और व्यवस्था की कमी।

नहीं। आज कोई शिकायत नहीं। टी बैग्स निकल आए हैं, दूध और चीनी भी।

चाय की ट्रे अपने सामने के टेबल पर रखी। फिर अपने को मेहमान समझकर चाय पीने लगी। अभिनेता, दर्शक, श्रोता, अतिथि, मेजबान सब एक में।

फोन बजा।

हैलो!

ईशान हूँ।

कहें।

जरा दरवाजे के बाहर देख लें।

आरण्या फुर्ती से उठी। किसी अभ्यागत का आगमन है क्या। ताली घुमाई, बाहर झाँका। हैंडल पर कागज का बैग लटक रहा था। हाथ में ले दरवाजा बंद किया। बैग में झाँका। फूल थे। साथ खुँसा था छोटा-सा कागज।

'पार्क में जूते न भिगोने के लिए।'

आरण्या खुश हो गई। यह छोटी-छोटी खूबसूरत खुशियाँ। नए जूते गीले होने से बचे और किसी एक को प्रभावित भी कर लिया। नरगिस के फूलों को भी पा लिया।

गुलदान में पानी डाला। फूल रखे और संगीत लगा लिया। कुछ देर बैठी-बैठी सुनती रही, फिर धुन के साथ नाचने लगी। पाँवों में जैसे कोई पुराना समय थिरकने लगा।

कुछ भी भूलता नहीं। स्मृति-अभ्यास।

क्या ऐसे समय में कोई पंक्ति भी जोड़ सकोगी!

हाँ, इतना ही कि अपनी लिपि स्वयं हूँ।

देर गए सोचा फोन पर धन्यवाद कर सकती थी। नहीं। इसे अनकहा ही छोड़ दो। मैं विशेष महसूस कर रही हूँ। उपहार में मिले हैं नरगिस के फूल! जिन पहाड़ों की हवाओं में सन्नाटे तैरते हैं, वहीं खिलते हैं नरगिस के फूल।

सुबह से बादल छाए थे।

दुपहर बाद पानी बरसने लगा। पहाड़ों पर बर्फ पड़ी लगती है। आरण्या बालकनी से बौछार और हवा की लहराती जुगलबंदी निहारती रही। ऊँचे तले से नीचे की तारकोली सड़क गहरी और चिकनी दीखती थी। बरखा की बूँदों तले पेड़ों के लहराते पत्ते जैसे हरे मंडप हों। धरती की ओर झुकते और आकाश की ओर खुलते पत्ते। अपनी ही छटा पर मोहित। बौछार का यह दृश्य-श्रव्य जाने कितना प्राचीन और नित-नित नया। सब अपनी लय में समय को तिरोहित करता है। हम हैं तो समय है।

समय तो हमारे बाहर भी है और आगे भी। वही है जो हमें आतंकित करता है। पर इस समय ऐसे बरसाती दिन में यह दुविधा क्यों और नर्मालाप भी क्यों!

आगे बढ़कर क्षण को पकड़ लो जो तुम्हारा है। यह शाम, यह क्षण, यह बारिश लपककर हथेली में समेट लो। एक बार चूकी तो हमेशा के लिए खिसक जाएगी।

आरण्या ने उत्साह से छाता और बरसाती निकाले और बरखा में घूमने निकल गई। अपार्टमेंट्स के सामने बिछी थीं नई सड़कें। इन पर तो अपने पुराने दिनों को खोजा भी नहीं जा सकता। जाने कितने पीछे छूट गए। छप्प—पानी का बड़ा-सा थक्का पैरों तले! बचो। बचाओ अपने को। कीचड़ में जूते सन जाएँगे। आरण्या फाँदकर एक ओर हो गई। दाईं पटरी के साथ नए पेड़ लगाए जा रहे हैं। ईंटों के सहारे खड़ी नर्सरी के ताजे पौधे।

सामने झुग्गियों के गुच्छाद समूह। सिरलुकाऊ ढलवाँ छतों पर नीले-पीले पोलीथीन-थिगलियोंवाले टाट, पत्थरों तले खुँसे हुए। सुरागों को बंद किए पीपे की झुग्गी में से बाहर

फैलते सिगड़ी के गीले धुएँ के साथ रोते बच्चे की आवाजें। अधगीले कच्चे फर्श पर पड़े-पड़े सूखा रोना। पानी चू रहा होगा। माँ होगी पानी को रोकने की जुगाड़ में।

बच्चा इस झुग्गी में से निकलकर कहाँ पहुँचेगा! क्या झुग्गियों के चक्रव्यूह में से निकल सकेगा, यह अभिमन्यु? नारकोटिक पोटलियों के खतरनाक लेन-देन से छुटकारा पा सकेगा कि किन्हीं पुश्तों तले गुम हो जाएगा? क्या साफ-सुथरे पक्के घर तक पहुँच पाएगा? क्या सुविधाओं के बाजार में से कुछ नोचकर जुटा पाएगा? इतिहास की अश्वमेधी दृष्टि क्या समय रहते इसकी पहचान कर लेगी? इतवारी कबाड़ी बाजार के पुराने कपड़ों की खरीदारी इसे उबार लेगी? डैनिम की नई मगर पुरानी दिखनेवाली पैंट खरीद सकने की हसरत पूरी कर सकेगा? क्या सार्वजनिक कृपाएँ इस नन्हे नागरिक तक पहुँच पाएँगी? क्या तब.तक इसकी धारण-शक्ति बची रहेगी? इसके बालिग होने में तो सोलह-अट्ठारह साल पड़े हैं। मुमकिन है अगली शताब्दी में नेता बन जाए। कौन जाने नायक कि खलनायक!

पानी तेज बरसने लगा। आरण्या के हाथों का छाता हवा में उड़ने लगा था। सड़क पार कर वह सामने की पटरी पर चलने लगी। पाँव के आगे कूड़े का ढेर। पैर बचाया। कूड़े और कीचड़ की दुर्गंध सड़क के इस हिस्से को लीप रही है। अद्‌भुत संबंध हैं हमारे कूड़े और कचरे से। हम उदासीन हैं इसकी बेचैन आक्रामकता से।

आरण्या ने अपने को घुड़का–कचरों के गंदे ढेर को नहीं–बहते पानी को देखो। बिजली चमकने लगी थी। अपने को सावधान किया–घर को लौटो।

फाटक पार किया और अपने ब्लॉक की ओर बढ़ते-बढ़ते इरादा बदल लिया। ऐसे मौसम में चाय का प्याला पड़ोसी मित्र ईशान के साथ भी पिया जा सकता है!

चाल में उत्साह उभरा। छाते पर का पानी छिटका, गलियारे से होकर लिफ्ट का बटन दबा दिया। फोन करना जरूरी था, पर ऐसे मौसम में इसकी माफी हो सकती है!

कॉलबैल पर हाथ रखा।

दरवाजा खुला। चेहरे पर न विस्मय, न खुशी। मात्र स्वीकार।

मन-ही-मन सोचा, आना कुछ गलत-सा हुआ शायद।

ईशान ने आरण्या के हाथ से छाता ले बालकनी में रखा और बरसाती गुसलखाने में टाँग दी।

माफ करें, गलत वक्त पर आ गई। सैर से लौट रही थी तो सोचा आपके साथ चाय पी सकती हूँ।

क्यों नहीं! आइए।

चाहें तो चाय मैं बनाती हूँ।

नहीं, चाय आपकी रुचि की ही मिलेगी। इलायची दालचीनी से परहेज तो नहीं!

जी नहीं।

किचन से कैटल और चम्मच की आवाज।

चीनी कितनी!

आधी चम्मच।

चाय के दो मग मेज पर रख दिए गए। प्लेट में बिस्कुट और नमकीन।

लीजिए।

आरण्या ने मग उठा लिया।

घूँट भरा और कमरे पर नजर मारी। खाली-सा। सामान है और लगता है, नहीं है। सामने वाला चेहरा जैसे अपने में ही सधा-जुड़ा।

आप बारिश में घूमने निकलीं—हिम्मत की। बौछार तेज थी।

फिर क्षण-भर बाद कहा—जाने मैंने ऐसा क्यों नहीं सोचा! घूमने जाया जा सकता था।

ईशान कुछ देर खामोश बैठे रहे, जैसे अपनी भूल पर पछता रहे हों! खाली प्यालों ने चौकन्ना किया।

क्या चाय और आए!

जी नहीं, शुक्रिया।

ईशान उठे और साथ के कमरे से पुरानी कापियाँ और किताबों के बंडल उठा लाए।

आज न जाने क्यों पुराने बॉक्स खोलने की सोच ली। बेटे का पुराना सामान कब से बंद पड़ा था। सुबह उठते ही लगा कि जैसे इसे आज खोलना ही है। देखिए यह पत्रिकाओं की कटिंग्स, स्टाम्प-एलबम, डायरी—

इनसान को पछाड़नेवाली मौत जाने कौन से रंग की होती होगी! उड़ते पाखियों को दबोच लेती है तो वह सदा के लिए लोप, गुम। हमेशा के लिए ओझल।

यह देखिए सूची किताबों की, किस हफ्ते क्या पढ़ा, महीने में कितनी किताबें और पूरे साल में क्या-क्या। सब दर्ज कर रखा है। जो पसंद आईं वह उक्तियाँ, सूक्तियाँ कहाँ-कहाँ से पढ़ी-उतारीं—सब कुछ विस्तार से। पूरे ब्यौरे की शैली। अंतिम बार जब हम तीनों दक्षिण-भ्रमण को निकले तो दिल्ली से चलते ही यात्रा-वर्णन इस मोटे रजिस्टर से शुरू कर दिया।

आरण्या की प्रतिक्रिया से बेखबर वह जैसे अपने बेटे को देखने लगे। उसकी आँखें अपूर्व थीं। कान बड़े-बड़े, याददाश्त अद्‌भुत!

आरण्या पुराने हरे रजिस्टर को उठा पन्ने पलटने लगी। कुछ ऐसे जैसे जो कहा जा रहा है उसे सुन न रही हो और जो पत्रों में देख रही है उसे पढ़ न रही हो।

मेहमान की उदासीनता क्या देख ली गई है!

मेज पर से खाली मग उठा लिये गए! ईशान बालकनी तक गए। बाहर झाँका—पानी थम गया लगता है।

आरण्या जाने को हुई—चलती हूँ।

नहीं—आज बहादुर को नहीं आना है। मैं ही बना रहा हूँ हलका-सा खाना। यहीं खा लेंगे। सब तैयार है—सिर्फ प्रेशर कुकर गैस पर रखना है।

आज नहीं, फिर कभी।

आज ही क्यों नहीं। इत्तफाक से हम दोनों इकट्ठा हैं। मुझे घूमने के लिए आधा घंटा चाहिए। आप चाहें तो किताबें देखें–चाहे संगीत सुन लें। कोई-न-कोई कैसेट मनचाहा मिल ही जाएगा।

ईशान के चले जाने के बाद आरण्या कुछ देर उचाट-सी बैठी रही। लगा जैसे कमरा खाली हो गया है और फिर जल्दी ही किसी दबे हुए ढेर से भर गया है।

यहाँ चले आने का निर्णय अजीब-सा ही लग रहा है। कुछ परेशान कर रहा है। जो कैसेट सबसे ऊपर पड़ा था, वह लगाया और जाने किस हड़बड़ाहट में ऑफ भी कर दिया। उठकर खुले बक्सों के पास जा खड़ी हुई। खुले बक्सों में पड़े हैं कलर बॉक्स, पेस्टल एल्बम, ज्यामिती बॉक्स, कैमरा–किसी अनजान बीत चुके बच्चे के।

दूरांतरित निकटता। जो है ही नहीं, सिर्फ पुराने सामान में से झाँक रहा है–उसका संबंध इस अनजान दर्शक से भला क्या! शतरंजी गोटें, लूडो, स्काउट यूनीफार्म, कैप, जेब में से लटकती सीटी। क्या बज सकती है अब भी! नहीं–स्तब्ध है। पुनरुत्तर तो ओंठों से आता है अगर साँस हो अंदर!

अमंगल कभी नहीं पसीजता। आत्मीयता से भी नहीं। स्मृतियाँ सहेजकर रखी हैं, पर मर चुकी हैं। देह की दक्षता ही इनका भविष्य है! उसके बाद अगर कुछ है भी तो स्मृति, और कुछ नहीं। जीने की निपुणता के बाहर हुए नहीं कि गए।

दूसरा बक्सा–जरसी, मफलर, मफलर में छोटा-सा बटन वैसे ही टँका है बिना गरदन के। स्कूल बैग, फुलबूट, राइटिंग पैड। हाथ से पकड़ पैड के पन्ने लहराए कि एक पन्ना सरसराकर अलग हो गया।

उठाया। एक पत्र।

सेंट कोलम्बस स्कूल
लंच-टाइम

हैलो छोटे मामा,

कई दिन से सोच रहा था आपको लिखने की। मेरे दोस्त प्रदीप को तो जानते हैं न! मैं अक्सर उसकी बातें आपसे करता रहा हूँ। वह बहुत होशियार और पढ़ने में तेज है। उसी के यज्ञोपवीत के बारे में लिखने जा रहा हूँ। माँ, पापा और मैं, हम सभी उनके यहाँ आमंत्रित थे। बड़े कमरे में परिवार के लोग और अतिथि बैठे थे। बीच में हवनकुंड रखा था। प्रदीप ऐसे कपड़े पहने था जैसे साधु बालक हो। प्रदीप के मामा पंडितजी इतनी तेजी से मंत्र उच्चारण कर रहे थे, जैसे कैनेडी के पढ़ने की तेज रफ्तार को मात देनी हो। मामा, पंडितजी का सुंदर उच्चारण सचमुच प्रशंसा योग्य था। ऐसा जैसा पंडित ही कर सकते हैं। हाँ, हवनकुंड का धुआँ आँखों को सता रहा था। मैं अपनी जेब से रुमाल ढूँढ़ने लगा जो मैं घर ही भूल आया था। पंडितजी घी की आहुति बहुत छोटी डालते थे। लगता

है घी असली था और पंडितजी कंजूसी बरत रहे थे। तभी हवनकुंड से आग की लपटों की जगह धुएँ के अंबार कमरे को घेर चुके थे। मैं चुपके-चुपके देख रहा था। पापा बीच-बीच में रुमाल से आँखें पोंछ रहे थे। माँ बरामदे में बैठी थी सो अच्छी रही। बाद में खाना परोसा गया। छोटे मामा, खाना खाते-खाते मैंने एक बात सोची कि मैं यज्ञोपवीत नहीं करवाऊँगा। मैं यह बिलकुल नहीं करूँगा और न ही ननिहालवालों को करने दूँगा। दादाजी कुछ कहेंगे तो उसका जवाब भी मेरे पास तैयार होगा। यही कि जब पापा का यज्ञोपवीत नहीं हुआ तो मेरा ही क्यों! सो मामा, मेरे यज्ञोपवीत के धुएँ से तो आप बच जाएँगे। आप मुझे लिखिएगा जरूर कि आपको मेरा निर्णय कैसा लगा।

अब बंद करूँगा। खेलने जा रहा हूँ। मेरे पत्र का जवाब जरूर देना मामा!

प्यार से आपका

लवी

पत्र का कागज भुरभुरा रहा है। साफ-सुथरा लेख। अच्छे स्कूल की पहचान। यह खत स्कूल के लॉन में बैठकर लिखा गया होगा। खाने की छुट्टी में!

छुट्टी।

आरण्या ने अंतरिक्ष-चित्रों की एलबम दुबारा पेटी में सरका दी और किताबों की शेल्फ के सामने आ खड़ी हुई। आकर्षित करता चटख कवर देख किताब खींची! पृष्ठ पलटे कि कुछ आहट-सी हुई, ज्यों कान में कोई फुसफुसा रहा हो।

कौन!

मैं हूँ!

आप कौन!

तुम्हारे पापा की मित्र हूँ। नजदीक ही रहती हूँ। बारिश में घूमने निकली थी। लौटते में रुक गई।

और पापा!

सैर को गए हैं।

हा-हा-हा...

आरण्या ने क्या किसी बच्चे की हँसी सुनी।

खूब जानता हूँ। पापा सैर का कभी नागा नहीं करते। उनके साथ घूमता रहा हूँ। कर्जन रोड होस्टल से इंडिया गेट। हर इतवार मैं उनके साथ हो जाता। एक दिन घर से बोट क्लब तक पहुँचते-न-पहुँचते मूसलाधार पानी पड़ने लगा। माँ भी साथ थीं। मोटा ओला टपका। बड़ी-बड़ी बूँदें। हम तीनों पेड़ तले खड़े हो भीगने लगे। शरण ली थी कि पेड़ तले कुछ बचाव होगा, लेकिन अंधड़ में पत्तों से भरी टहनियाँ इतनी तेजी से झूल रही थीं कि माँ और पापा सिर बचाते रहे और मैं दोनों के बीच लुक गया। आँधी जरा-सी थमी तो मैं माँ से दिल्लगी करने लगा।

देखो माँ, वह सामने स्टेडियम के ऊपर से उड़नतश्तरी चली आ रही है।

माँ-बाप दोनों उस दिशा की ओर ऐसे देखने लगे ज्यों सचमुच में उड़नतश्तरी दिखाई दे रही हो।

उसमें बैठे किसी दूसरे लोक के प्राणी को पहचान रही हो न!

माँ बोली–बेटे, भगवान हमेशा सक्रिय हैं। वह नाना रूपों में प्रकट होते हैं।

माँ, हम विज्ञान की बात कर रहे हैं।

हाँ-हाँ, ज्ञान-विज्ञान सब भगवान के कार्य-कक्ष से ही अनुशासित होते हैं।

मैं पापा की ओर देखकर मुसकराया। आकाश, धरती, पाताल सभी जगह भगवान की ही प्रयोगशालाएँ हैं। वैज्ञानिक वहाँ पहुँच चुके हैं। पापा, मैं तो अपनी छोटी-सी प्रयोगशाला ऊपर आकाश में बनाऊँगा। जो-जो लोग अंतरिक्ष यान में बैठकर ऊपर पहुँचेंगे–मैं उनका इंटरव्यू लूँगा और यहाँ के अखबारों में भेजूँगा।

जाने क्यों माँ और पापा दोनों चुपका-सा हो रहे। मैं बोलता रहा, वह खामोश रहे।

रात को खाने पर माँ ने पूछा–बेटे, यह बताओ तुम्हारा सबसे निकट संबंध किस से है।

मेरे अपने से।

क्या!

हाँ माँ, यह मैं हूँ न। मुझसे, मेरे नाम से। आप से, पापा और दादू से और दादी से।

नाना से क्यों नहीं!

उनके अपने पोते जो हैं।

पापा मुसकराए पर माँ गुस्सा हो गई–इन दिनों कौन है तुम्हारा दोस्त, किससे बातें किया करते हो?

माँ, मैं अपने आप कुछ नहीं जानता क्या?

नहीं, तुम तो बहुत कुछ जानते हो–वह भी जो मैं और तुम्हारे पापा नहीं जानते।

मैं माँ की तड़ी समझ गया।

आपका मुकाबला थोड़े कर रहा हूँ। मैं तो आपका बेटा हूँ। क्या आप पहचानती हैं मुझे। यह लड़का जो स्कूल जाता है। शाम को घर लौट आता है। पढ़ने में अच्छे नंबर लाता है और अब आपके सामने बैठा है! क्यों पापा!

माँ मुसकराने लगी। पापा एकटक देखते रहे। मैं जान गया वह मुझसे नाराज नहीं हैं। न खुश होने पर तारीफ, न नाखुशी पर डाँट। ऐसे हैं मेरे पापा।

सोने से पहले पापा ने मुझे और दिनों से ज्यादा प्यार किया। मैं सो गया हूँ यह जानकर पापा माँ से बोले–सुना तुमने जो बेटा कह रहा था?

जो भी कह रहा हो, मुझे चिंता होती है। यह बचपन की सोच नहीं। हमें लवी के क्लास-टीचर से बात करनी होगी।

सुबह माँ ने फादर जोजेफ के लिए एक बंद लिफाफा मेरे हाथ में थमा दिया।

बेटे, याद से फादर जोजेफ को देना। मैंने उनसे वक्त माँगा है।

क्या मुझसे कुछ गलती हुई माँ?

नहीं, बड़ों की हर बात में मीन-मेख नहीं निकालते।

पापा ने मुझे स्कूल ड्रॉप किया। जाने लगे तो मैंने कहा—माँ नाहक परेशान हो रही हैं। यह लिफाफा आपके पास छोड़ दूँ तो कैसा रहे!

पापा शरारत से मुझे देखने लगे। तुम्हारी माँ ने सिर्फ तुम्हारे काउंसलर से वक्त माँगा है बेटे! इस पर तुम कैसे एतराज कर सकते हो!

समझ गया मैं। माँ ही नहीं पापा भी इसमें शामिल हैं। करने दो जो करते हैं। बाई-बाई पापा!

आरण्या कुर्सी पर बैठ गई जैसे थक गई हो।

बाई बच्चे! हम-तुम आज से पहले कभी मिले नहीं थे। तुम जरूर पढ़ने में अच्छे रहे होगे। तुम्हारी कापियाँ बता रही हैं।

और जो यह बातें कर रहे थे तुम!

वाह, यह क्या कह रही हैं आप!

बोल तो आप रही थीं, मैं तो सिर्फ सुन ही रहा था।

मेज पर खाना लगा। सूप, स्टीम की हुई सब्जियाँ, दही, फल, दो गिलास शहद और नीबू।

आरण्या निगाहों से पढ़ने लगी भरे गिलासों को। शहद-नीबू, नीबू-शहद। इस मौसम में, इस गीले दिन!

चाहें तो ब्रांडी डाल सकता हूँ।

धन्यवाद! मैं पसंद करूँगी।

पीछे से कोई आया तो नहीं! श्रीनिवासन को आना था।

जी नहीं।

आरण्या सोचने लगी। क्या तभी कोई आता है जब सशरीर आता है। कभी-कभी खयालों में भी अपने पुराने घर में आगमन हो जाता है।

चाहा, पिता को बताए कि घर से अनुपस्थित बच्चा आज शाम चला आया था—पर खामोश रही।

ईशान बोले—जाने आज क्या सूझा कि लवी का सामान खोल बैठा। कल ही सँभाल सकूँगा।

आरण्या ने चौकसी से कहा—मैंने सभी कुछ वापस बक्सों में डाल दिया है।

ओह!

जब कभी खोलता हूँ—सोचता हूँ रखने से फायदा और-फिर समेटकर वहीं रख देता हूँ। जब कभी उसकी स्कूल यूनीफॉर्म छूता हूँ तो लगता ही नहीं कि वह अब इस घर में नहीं है। जानता हूँ अगर यहाँ नहीं तो कहीं-न-कहीं है जरूर। जब गया तो तेरह का था, अब तो किसी का पिता बन चुका होगा!

दोनों एक साथ अजीब-सा हँसने लगे जैसे कुछ हल्का महसूस किया हो।

ईशान बोले—एक दिन हम दोनों कृष्णमूर्ति को सुनने जा रहे थे। लवी मचल गए। आपके साथ चलूँगा।

समझाया—तुम वहाँ क्या करोगे! बैठे-बैठे ऊब जाओगे।

मैं उन्हें सुनना चाहता हूँ।

नहीं—तुम अभी बहुत छोटे हो। उन्हें समझ नहीं पाओगे।

आप क्या कह रहे हैं माँ-पापा! मैं आइंस्टीन को पढ़ने की कोशिश कर सकता हूँ तो कृष्णमूर्ति का भाषण भी समझ सकता हूँ। ज्यादा नहीं तो थोड़ा ही सही।

बेटे, कृष्णमूर्ति के शब्दों के अर्थ अभी तुम ग्रहण नहीं कर सकते। नाहक जिद कर रहे हो।

पापा, ऐसा ही सही। उन्हें देख तो पाऊँगा। फोटो में उनका चेहरा मुझे बहुत भाता है। बिलकुल हिंदुस्तानी मुखड़ा।

आरण्या ने यह प्रसंग ऐसे सुना जैसे बच्चे को पहले देख रखा हो।

कुछ देर पहलेवाली धुंध जाने कहाँ विलीन हो गई। छँट गई।

ऐसे मौसम में आप आईं—अच्छा लगा। पहले कुछ अटपटा लगा था—लवी का सामान खुला पड़ा था और मैं पुराना-सा फालतू महसूस कर रहा था। जैसे बीते बरसों की गठरी अचानक खुलती गई हो।

आरण्या का चेहरा अनजाने ही सख्त हो आया। आवाज में नरमाई लाकर कहा—हो चुका है सब कुछ बहुत पुराना। जर्जर कागज भुरने लगे हैं। इतने पुराने को देखकर उसे नया करने की जरूरत कहाँ है!

हाँ! ठीक कह रही हैं।

आवाज में कुछ गरमाहट थी।

पानी फिर बरसने लगा था। बातें होने लगीं तो कुछ ऐसा लगा कि पहाड़ भी आसपास आ जुटे हैं। टीन की छत पर जब लगातार पानी बरसता है तो मैं ऊपरवाले पर मुग्ध हो जाती हूँ।

ईशान हँस दिए।

जब बादल गरजते हैं और बिजली चमकती है तो चमत्कृत होती हूँ। और जब नद-नदिया पानी से भर जाते हैं—किनारे तोड़कर बहा ले जाते हैं—गाँव-नगर-घर-बाहर-ढोर-डंगर—तब, तब ऊपरवाले को संशय और संदेह से देखने लगती हूँ कि दूसरी सब व्यवस्थाओं की तरह ब्रह्मांड के स्वामी भी आतंकवाद का सहारा ले रहे हैं। वह कारकूनी दैवी शक्तियों को इशारा कर रहे हैं कि जाओ तहस-नहस कर दो। डरा दो, भयभीत कर दो। इसी के बाद सुधरेंगे और हाथ जोड़कर भक्ति-भाव से नमित होंगे! स्वयंसिद्ध प्रभु की भी तो यही नीति है।

ईशान सिर्फ ताकते रहे, कुछ बोले नहीं।

आरण्या मुसकराने लगी, लेकिन ईशान की मुखाकृति गंभीर हो गई। कुछ देर देखते रहे, फिर पूछा–किसी दैवी शक्ति में तो विश्वास करती हैं!

अपने विषय में कोई यह नहीं कह सकता कि मैं नहीं हूँ। जब तक हूँ–हूँ। परमात्मा तो स्वयंसिद्ध हैं। मैं अपने विश्वास की तुलना कैसे करूँ। उन्हीं का एक अंश मुझमें भी होगा।

ईशान ने उठकर रेडियो लगाया। टी.वी. का शोर सुनना चाहें तो...

नहीं। रेडियो ही...

खबरें सुन लेने के बाद वे दोनों देर तक बातें करते रहे।

ईशान अल्मोड़ा पहुँच गए थे। अल्मोड़ा कालीमठ, मिरतोला, हेमावती काटेज। अर्ल ब्रूस्टर और उनकी पत्नी एलिजाबेथ। ब्रूस्टर और एलिजाबेथ दोनों चित्रकार थे। अर्ल पर्वत-शिखरों को चित्रित करते। उनमें बर्फ के लिए कुछ अजीब-सा सम्मोहन था। उनके द्वारा अंकित एक चित्र शून्यता ने मुझे भेंट किया था। उसे बाद में मैंने उन्हें लौटा दिया था।

ब्रूस्टर और एलिजाबेथ दोनों डी.एच. लारेंस और फरीदा के मित्र। इन लोगों का परिचय कापरी, इटली में हुआ था। इन सबने मिलकर कैपरी से कोलम्बो तक एक ही जहाज पर यात्रा की थी।

वहाँ पर एक और प्रभावशाली अमरीकन ईसाई मिशनरी मिले थे स्टाइनर, जो धारचूल के भोटिया लोगों में काम करते थे।

अर्ल ब्रूस्टर का कहना था कि लारेंस को शिव मानवीय देवता के रूप में आकर्षित करते थे। अर्ल ब्रूस्टर उन दिनों अरविन्द की लाइफ-डिवाइन से बहुत प्रभावित थे। वहीं एक और असाधारण महिला मिली थीं–लिजलैरेमेंड। उनके पति यूनेस्को में थे। लिज उन दिनों शारदा माँ पर किताब लिख रही थीं।

आरण्या ने क्षमा माँगते हुए कहा–जानते हैं ईशान, स्वामी रंगनाथन के सुझाव पर मेरे पिता मुझसे शारदा माँ का हिंदी अनुवाद चाहते थे! क्या संयोग!

क्या कर सकीं!

नहीं। मुझमें अनुवाद का कोई कौशल नहीं था!

एक अविस्मरणीय शाम याद आती है। अल्मोड़ा से चल शून्यता के साथ हम मिरतोला पहुँचे! वहीं हम कृष्ण प्रेम से मिले। कृष्ण प्रेम पहले प्रोफेसर निक्सन थे। वह लखनऊ विश्वविद्यालय के सबसे छोटी उम्र के इंग्लिश के प्रोफेसर थे।

लखनऊ के ही प्रोफेसर चक्रवर्ती की पत्नी यशोदा माँ कृष्ण-भक्त थीं। निक्सन उनसे इतने प्रभावित हुए कि सब कुछ छोड़-छाड़कर मिरतोला रहने लगे।

याद आया, अल्मोड़ा की हेमावती कॉटेज में एक बंगाली विद्वान थे अनिर्वाण। वह वेदों का बंगाली में अनुवाद कर रहे थे। एक और सज्जन थे बोशी सेन। वह जगदीश चंद्र बोस के शिष्य थे।

अजीब संयोग ही कहना होगा—एक समय, एक धरती, एक स्थल पर नाना रूपों की प्रतिभाएँ कैसे कहाँ-कहाँ से आकर जमा हो गई थीं। विलक्षण अनुभव था।

जरूर रहा होगा।

आरण्या अपने अतीत को साक्षात देखने लगी हो जैसे।

काठगोदाम से कोसानी तक की पैदल यात्रा कर चुकी हूँ। रामगढ़ से मुक्तेश्वर तक का पैदल सफर कभी नहीं भूलता। नाथुआखाँ से मुक्तेश्वर तक की खड़ी चढ़ाई। सामान उठाए दो कुली साथ थे। शीतला इस्टेट से ऊपर चढ़े तो उनकी चोटी का पसीना ऐड़ी तक टपकता था। उन दिनों मुझे चढ़ाई चढ़ने में कोई परेशानी न होती, पर उतराई से उतरना मुश्किल लगता! हाँ, अगर आप तेज रफ्तार से दौड़ते हुए उतरते हैं तो थकन नहीं होती। जैसे पाँव बूढ़े होते हैं, वैसे दौड़ने से सकुचाने लगते हैं।

आरण्या जैसे मुक्तेश्वर की ओर देख रही हो!

सूरज डूबते जाने कैसा दोहरा-सा समय आकाश पर उतर आता है। गूढ़ अँधेरे का हल्का-सा उजाला और उजाले का झीना-सा अँधेरा!

ईशान गंभीरता से आरण्या का चेहरा टटोलते रहे कई क्षण—फिर आँख झपकी और कहा—दिलचस्पी हो तो इसके आगे की बात मेरे पास है। सुनना चाहेंगी?

आरण्या ने सिर हिलाया—जरूर।

मैं उन दिनों प्रोबेशनर था और अल्मोड़ा में पोस्टिंग थी। एक दिन शून्यता को उनकी डाक और स्टाम्प सौंपने चला गया। शून्यता डैनिश नागरिक थे। उनकी आँखों का विस्तार और मौन स्वीकार देखकर महर्षि रमण ने उन्हें शून्यता नाम दिया था। पहुँचा तो देखकर शून्यता खुश हुए। चाय पिलाई। वह अपने मौन से ही मुझे बहुत कुछ कह रहे थे। जो कुछ भी कहा जा रहा था—बिना शब्दों के मुझ तक पहुँच रहा था। मेरे अंतर को खटखटा रहा था। एक बड़े विशाल लैंडस्केप में उनकी कॉटेज किसी स्वप्न-सी लगती थी। उसके सामने बाहर बैठे-बैठे शाम उतरने लगी। मैं उठने को हुआ कि शून्यता ने हाथ से संकेत दे दिया। बैठे रहो। फिर शिखरों की चोटियों को देखते-देखते कहा—

बर्फ कैसे-कैसे रंग बदलती है।

धीरे-धीरे साँझ फैलने लगी थी।

नीले निर्मल आकाश में चाँद भी सजा था। लगा यह लोक दुर्लभ है—इस लोक में मनुष्य-जन्म और भी दुर्लभ।

हम लोग कितनी देर बैठे रहे, कुछ पता नहीं। लंबी शाम जैसे एक युग रहा हो। एक ऐसी संपूर्णता जो कभी दोहराई न जा सके। आज भी देख सकता हूँ। निर्मल आकाश का चंदोवा, तारे, पहाड़, दूर गहराते शिखरों की चोटियाँ। सभी कुछ ऐसा पारदर्शी कि स्वयं भी स्वयं को देख सके! शून्यता दो प्याले थाम बाहर आए तो भव्य लग रहे थे। पहाड़ों के आकार की तरह स्थिर, फिर भी हवा की तरह फुर्तीले।

तब जान नहीं पाया था कि मुझमें क्या घट रहा था! शायद इतना ही कि कुछ

विशेष! वह 'विशेष' आज भी मेरे अंदर रचा है। आज जो मेरा मैं है, वह उसी शाम की देन है, यह जानता हूँ।

हम लगभग चौंककर दोनों एक साथ उठे थे। फाटक पर हम दोनों ठिठके थे एक साथ।

मुझे लगा, आत्ममंथन की यही घड़ी है। यही और यहीं।

शून्यता जैसे अपनी आँखों से मेरा मन पढ़ रहे थे।

धीमे, मगर स्पष्टता से कहा–हम सभी को अपने-अपने स्रोतों तक पहुँचना होता है। पहुँचेंगे। अब तुम्हें और नहीं रोकूँगा। चलो।

शून्यता मुसकराए थे, जैसे किसी बच्चे को छुट्टी देते हों।

ईशान देर तक खामोश बैठे रहे, जैसे उस क्षण से जुड़े हों।

पहाड़ के उस सुनसान में शून्यता का वह हँसना सचमुच किसी उन्मुक्त निर्मल झरने जैसा लगा था। दार्जिलिंग के रास्ते में जिस पगले झोरे की बात आप कर रही थीं–कुछ वैसे ही।

आरण्या, मुझ तक वह स्वर कुछ ऐसे पहुँचा जैसे पितृ-शक्ति का कोई अर्जित कण जीवित क्षण बन गया हो।

वह क्षण नितांत निज का, पवित्र और गोपनीय था। बरसों बाद भी उतना ही सूक्ष्म। सुख होता है यह जानकर कि मैंने उस अलौकिक पल को जिया। जी सका। कुछ घट रहा था जो उस निर्मल क्षण में तिरोहित था।

अल्मोड़ा से तबादला हो जाने के बाद मैं उन्हें लिखता रहा और उनसे जवाब पाता रहा। शून्यता लंबे-लंबे पत्र लिखा करते। मैं उन्हें स्टाम्प भेजता या स्टाम्प खाते में मुझे मात्र पाँच रुपए भेजने होते थे। इसका फैसला हम दोनों के बीच हो चुका था! इस लीक को फलाँगने का हक मुझे नहीं था!

शून्यता ने एक पत्र में लिखा–ईशान, तुम सिर्फ अपने में ही नहीं हो, मुझमें भी स्थित हो। मैं हूँ न तुम्हारा स्थायी पता! तुम्हें अपने में महसूस करता हूँ! जानते हो किसलिए? तुम्हारे निर्मल चैतन्य के लिए। याद रहे, नाम से ही नहीं, तुम शून्यता के भी ईशान हो, शिव हो। संबंध, अस्तित्व कोई भी हो उसकी पवित्रता सुरक्षित रहनी चाहिए!

आरण्या मन-ही-मन चौंकी! प्राचीन हिंदू संवेदन!

ईशान आपकी उम्र क्या रही होगी!

यही पच्चीस-छब्बीस!

सामने की आँखों में नटखटपन देख ईशान गंभीरता से बोले–कभी-न-कभी शून्यता के शब्दों से इसका गूढ़ार्थ जरूर समझोगी! वह अक्सर दोहराते, तुम संपूर्ण पुरुष नहीं हो सकते अगर स्त्री की तरह प्यार करना न सीखो।

ईशान आरण्या के चेहरे पर इन शब्दों की प्रतिक्रिया देखते रहे। वाह! स्त्रियाँ तो चाहती हैं वह पुरुष की तरह का प्यार करना सीखें। उतना ही जितना करना जरूरी हो। अपने को उसकी आसक्ति में विलीन न कर दें।

दोनों लंबे क्षण तक एक-दूसरे को तकते चले कि अनायास आरण्या हँसी। सृष्टि

के दो मन, स्त्री-पुरुष अलग-अलग दिशाओं से एक ही बिंदु को देख रहे हैं। देख रहे हैं कि मानवीय होने के एक-से अधिकार को पा सकें। जी सकें।

दो

मैं लाल-पीले रंगों से दुःखों को साकार करना चाहता हूँ।

किसने कहा था—याद क्यों नहीं आ रहा! उम्र की गिनती घटाते चले जाने से भी स्मृति अपने वक्त पर मद्धम पड़ती चली जाती है। गिनती के फेर में से निकल आने के सिवाय अब कोई चारा नहीं! हाँ, लाल-पीले रंगोंवाले शब्द संत-महात्माओं के नहीं हैं! उसके हैं जो अपने अभावों को जीवंत रंगों में अंकित कर गया। कूची से दुपहर की गरमाहट अंकित कर गया। हार-हारकर जी उठने के लिए! भला वक्त ने उसे इतना क्यों पछाड़ा! शायद इसलिए कि बार-बार हताश हो और हर बार उठ खड़ा हो फिर से जीने के लिए। अभाव, दुर्दिन और दूर-दूर तक फैला रेगिस्तान। वानगो! उस सूखे में से बहती रही रंगों-भरी कूची से ऊष्मा और ऊर्जा! सूरजमुखी!

आरण्या, तुमने भी जो पाया-खोया, वह इतना विषादी तो नहीं रहा। बेमौसम कुछ-कुछ चमकता रहा। आलोकित करता रहा तुम्हारे गहरे अँधियारों को!

हर साँझ अपने होने से ढलती है और रात बन जाती है। रात पुरानी पड़ जाती है और सुबह बनकर नई हो उठती है। हर क्षण परिवर्तन के पंखों पर! कभी अंदर के नुकीले कोनों से कुछ बिंध जाता है तो कभी खँरोंचें, कभी लहू की बूँदों से छनकर आते आँसू। बदलते रहते हैं वह। मौसम पर स्मृति में टँके रहते हैं योग-संयोग। मन नहीं भूलता उसे जो शेष हो चुका है। पुरानी कड़ियों से सटा पड़ा है। लौटाओ, देखो और फिर पीछे पलटा दो।

ईशान के यहाँ की वह शाम कुछ ऐसी, मानो किसी उपन्यास को पलटते एक पन्ना फड़फड़ा गया हो। पुराना पीला पड़ा ऐसा कागज, जिसकी प्रकाशन तिथि को देख लेने से भी कोई फर्क नहीं पड़ता!

लगभग सप्ताह के बाद आरण्या ने ईशान को चाय के लिए आमंत्रित किया। ऐसे कि कोई औपचारिकता न हो।

फोन पर पूछा—क्या चाय ले चुके हैं?

नहीं, तैयारी में हूँ। पानी चढ़ाने जा रहा हूँ।

आज मेरे साथ लें तो कैसा! लगाने ही जा रही हूँ।

नीबू तो न चाहिए होंगे।

नहीं, अभी फ्रिज में हैं।

आरण्या ने चाय की ट्रे मेज पर रखी। साथ रखे मेवे और कम चीनी के बिस्कुट।

ईशान आए तो हाथ में शहद का टिन था और साथ थे नीम के पत्ते।

सुबह टहलते हुए तोड़े थे–धोकर पोंछ दिए हैं। चाहें तो फ्रिज में रख लें।

धन्यवाद ईशान, मैं नीम खाना पसंद करती हूँ।

यह जानकर हैरानी हुई कि आपको नीम का स्वाद बुरा नहीं लगता।

मैं मीठा-कड़वा दोनों चाव से खाती हूँ। मेरी बोली से अंदाजा लगाया जा सकता है! यहाँ सिर्फ मीठा ही नहीं, कड़ुवा भी है।

वह हँसने लगी।

नीम और करेला खाते रहने से ही मिठाई की मिठास का लुत्फ लिया जा सकता है।

ईशान की आँखों से त्वरित गति से कोई संदेश उभरा और आरण्या तक पहुँच गया।

चीनी के कारण तो नहीं!

नहीं। अभी तक तो चैकअप में नहीं निकली। आगे का कुछ मालूम नहीं। पुराने शरीर में कुछ भी खुराफात उठ सकती है।

प्लेट आगे की तो ईशान ने बिस्कुट उठाया। काजू की प्लेट परे सरका दी।

काजू से परहेज करना ही अच्छा है। इसमें हाई कोलेस्ट्रोल होता है। इसके बारे में एक रोचक किस्सा सुना था। कंपनी बॉस की उपस्थिति आपकी तरक्की में बाधा बन रही हो तो उसे जी भरकर काजू खिलाइए। वह सदा के लिए छुट्टी पा जाएगा और आप मनचाही कुर्सी पर पहुँच जाएँगे।

दोनों मिलकर हँसते रहे।

आरण्या ने केतली पर से टीकोजी उठाई।

नहीं, अभी चाय को गहराने दीजिए। इतने में आपको कुछ पंक्तियाँ सुना देता हूँ! फाइल में से हाथ लग गईं तो लेता आया। सोचा आपको भाएँगी। हम लोग उस शाम शून्यता की बात कर रहे थे न! उन्हीं के पत्र का अंश है।

"धन्य हूँ कि शुभ धवल हिमालय पर खड़ा हूँ।

कोई स्वप्न-सा लगता है।

जो भी है यह क्षण अब उसे ही समर्पित है।

यह क्षण, यह दिन, यह दुपहर। ऊपर हेलीकॉप्टर उड़ रहा है। ध्वनियों की पताकाएँ लहरा रही हैं।

बर्फीले पहाड़ों से कतरा-कतरा बूँदें झरती हैं और नदी बन जाती हैं।

ऊपर नीले आकाश में सूर्य चमकता है।

नीचे मैं अपने दो पाँवों पर खड़ा हूँ।

अवाक और कृतज्ञ।

हे परम प्रिय,

धूप और उजाले के देवता, हिमालय को अपने संचित कोष से इसी तरह अनुग्रहीत करते रहो।

सींचते रहो।"

शब्दों का सत्व उदात्त कई क्षण कमरे को घेरे रहा। अंतर में रसता रहा। पल-भर को महसूस हुआ कि मैं ही कारदूला पर खड़ी हूँ और यह पंक्तियाँ दोहरा रही हूँ। कभी सुनाऊँगी आपको जो मैंने लिखा।

यह टुकड़ा मूल अंग्रेज़ी में था क्या!

हाँ आरण्या, मैंने इसे देवनागरी में रूपांतरित कर दिया।

हिमालय हम भारतीयों के लिए सनातन है। इसका आख्यान ही हमारे राष्ट्र का आख्यान है। यह अभिभूत करता है, भयभीत नहीं।

हिमश्री भौगोलिक होते हुए भी शून्यता ने हमारे ही संवेदन से इस विशाल चित्र-मुख को आँका है।

हिमालय एक संस्कार है—प्रगाढ़ और गहन, एक साथ!

क्षण-भर की खामोशी के बाद आरण्या ने कहा—

मैं आज ही एक ज्ञापन देने जा रही हूँ नगरपालिका को कि हमारे प्राचीन फेफड़ों का भी कुछ ख्याल करें। शहर का धुआँ हमारी आत्माओं को काला कर रहा है।

काम कैसा चल रहा है!

मैं मनस्थितियों की विशेषज्ञ हूँ। कभी रफ्तार इतनी तेज कि लगे ट्रैक में सबसे आगे हूँ। कभी इतनी धीमे कि सबसे पीछे पिछड़ी लगूँ।

उम्र के इस मोड़ पर तो अपने से संतुलन की अपेक्षा होनी चाहिए।

आप ठीक कह रहे हैं, पर जिस स्वभाव में मैं निबिद्ध हूँ वहाँ ऐसा उल्लेखनीय कुछ भी नहीं। फिर दुपहर ढल जाने पर—

नहीं, आप अभी भी दुपहर का प्रभाव उत्पन्न करती हैं! आपके पास ऊर्जा का खासा स्रोत है।

मेरे होने के अर्थ मुट्ठी में बने रहे हैं, शायद इसीलिए ऐसे देखी जाती हूँ।

नहीं, हम पुराने से आँखें चुराए-चुराए ही अपने गुण-दोष दोहराते रहते हैं। कभी अतीत के लिए लापरवाह और भविष्य के लिए शंकालु!

और कभी इन सबको भूल-भाल नींद में बेखबर हो जाते हैं। अपनी बात कहूँ तो मेरी सुबह की नींद ऐसी कि लगे ही नहीं कि मैं हूँ भी!

सुबह देर तक सोना अच्छा नहीं।

जानती हूँ, पर दशकों लंबी आदत को बदलना आसान नहीं।

ईशान बोले—आसन-व्यायाम देह को सजग रखते हैं। उम्र के इस छोर पर पहुँचकर

देह-संचारिणी सिकुड़ने लगती है। शिथिल पड़ जाती है, इसलिए किसी न किसी तरह की हरकत जरूरी है। रोज की सैर तो और भी।

जानती हूँ धावल्य और धुँधलके का फर्क! वक्त है, कुछ पुराना भी कुछ नया भी। पुरानी आकृतियाँ ऐसे दीखतीं जैसे नई हों और नई कुछ ऐसे कि पुरानी हैं, और उन्हें सदा से जानती हूँ।

सपने में दीख जाती हैं अपरिचित आकृतियाँ। पहचान करना चाहती हूँ और वह कुहासे में विलीन हो जाती हैं। हाँ, कभी दीखता है शिलाओं पर से बहता निर्मल नीला जल।

मैं कभी नींद में देखता हूँ कि जो देख रहा हूँ वह स्वप्न है और यह भी कि वह स्वप्न नहीं है। और मैं खड़ा-खड़ा किसी दूसरे को अपनी तरह देख रहा हूँ कि वह रहा जो मैं हूँ।

दिलचस्प!

आरण्या देर तक ईशान को देखती रही। कौन है जो देख रहा है और कौन है जो दीख रहा है।

आप जैसा कह रहे हैं बिलकुल ऐसा ही नहीं, पर सोते-सोते मैं कभी अमलतास की लंबी कतार देखती हूँ। पीले फूल और ऊपर से लटकती हरी-हरी फलियाँ। लगता है मैं भी एक पेड़ हूँ—हरे-पीले से आच्छादित। हेली रोड की सुलगती सुहावनी सड़क पर कभी सुबह-शाम चला करती थी। शायद वही दिमाग में लुकी पड़ी है।

ईशान देर तक पुराने मुखड़े को देखते रहे।

पुरानी बात होगी पर उसे दोहराने की ललक कहाँ तक खींच लाती है!

जब आप दूसरों की दृष्टि का मर्म अपने में सोख लेते हैं तो अपनी आँख पराई हो जाती है! मेरे होने का अर्थ मेरे निकट मेरे अपने हैं। शायद इसीलिए सीमित भी। मेरी अनिवार्यता मेरे अपने लिए है, क्योंकि मैं हूँ अपने आपमें।

ईशान चुपचाप इन शब्दों के पीछे का वर्चस्व देखने की ताक में व्यस्त रहे।

आरण्या असमंजस में अपने कहे गए पर ईशान की प्रतिक्रिया खोजने लगी।

नई चाय बनी और दोहरा ली गई।

आप इन दिनों दिल्ली के बाहर तो नहीं जा रहीं!

जी नहीं। अभी कोई प्रोग्राम नहीं!

मैं जा रहा हूँ—महीने-भर के लिए।

आरण्या ने उत्साहित किया—

यह तो अच्छा है। बीच-बीच में घूमते रहने से एक शहर की एकरसता उबाती नहीं।

बहुत घूमा हूँ पर अब परेशानी होती है।

क्या सफर की तैयारी से?

दिनचर्या में खलल पड़ जाता है—इसीलिए।

अपना हिसाब ठीक इससे उल्टा है। यह सोचकर कि बाहर जाना है, मैं अपने में नया उत्साह महसूस करती हूँ। सूटकेस सदा जाने को तैयार!

जानता हूँ। एक नहीं—तीन-तीन!

यह कैसे जान गए आप?

देखा है न आपको कई बार टैक्सी से लिफ्ट तक लाते! चाहता रहा कि आपका हाथ बँटाऊँ पर आँख के कारण डॉक्टर की ताकीद है बोझ न उठाने की!

मैं पुरानी तर्ज की रेलयात्री हूँ। मेरी पूरी गृहस्थी मेरे साथ चलती है।

ईशान हँसने की जगह गंभीर हो आए। अब तो सामान को हलका करने का समय है!

आरण्या नटखटी में बोली–

दो-तीन घर बदलने में मेरा सामान आधा रह गया है।

जवाब में ईशान ने देखा-भर, जैसे कहते हों मैं कुछ और कह रहा था।

आपको कष्ट दे रहा हूँ! मेरे मित्र जिन्हें मैंने यह काम सौंप रखा है, दौरे पर हैं सो यह लिफाफा आपके पास छोड़ रहा हूँ।

क्या टेलीफोन, बिजली के बिल हैं?

नहीं, वह आफिस में जमा करवा दिए हैं। हाँ, कुछ भी कहीं अचानक घट सकता है। वह छुट्टी का दिन भी हो सकता है। मेरे लिए किसी को इंतजाम में असुविधा हो, यह उचित न होगा!

ऐसा क्यों सोच रहे हैं ईशान! आप निश्चिंत होकर जाइए। कुछ होनेवाला नहीं!

यह हलकी बात नहीं, आरण्या! मेरे मित्र मालवाड़े अमरीका से लौटते हुए लंदन एयरपोर्ट पर ही चिर-विश्राम पा गए। मिसेज मालवाड़े साथ थीं। भाग-भागकर बच्चों को सूचना दे सकीं। कौशिक और अलका भी लंदन पहुँच गए! मिली हैं न उनसे?

जानती हूँ। पर हम इस घटना को अपवाद क्यों न मान लें!

ईशान शांत स्वर में बोले–इसलिए कि हम पुकार लिये जानेवालों की पंक्ति में हैं! जाना भी एक क्रिया है।

अंतिम न भी जोड़ें तो भी–हर किसी के लिए एक दिन मुकर्रर है। फिर पहले से ही फिक्र करने से फायदा!

आपकी सराहना करूँगा। लेकिन यह न भूलिए, मैं अकेला हूँ। आगे-पीछे कोई है नहीं। इसीलिए आपको यह देने चला आया।

माफ करें–कह रही थी इसलिए कि आप अभी भी पुराने युवाओं के-से दीखते हैं।

आप ही की तरह। हम दोनों की जन्मतिथि एक ही है।

अचरज! पर आप तक यह जानकारी कैसे पहुँची।

हैं कुछ लोग जो कहीं से भी कुछ ढूँढ़कर ले आते हैं।

मुझे इस पर एतराज है साहिब, मुझे तो बरसों इस गिनती में से कुछ-न-कुछ घटाते चले जाना था। याद रखें, मैं आपकी उम्र की नहीं हूँ–छोटी हूँ। जन्म-तारीख में जरूर कुछ गड़बड़ होगी।

दोनों हँसते रहे।

सुबह की फ्लाइट से निकल रहा हूँ। लौटकर इस पर बहस होगी। हाँ, चैक और नकद दोनों रख दिए हैं। लिफाफे में वसीयत की कॉपी भी है।

आरण्या ने शब्दों पर जोर दिया—आपकी अमानत है और मेरे पास सुरक्षित है। लौटने से पहले इत्तला कीजिएगा—ताकि मैं आपका इंतजार करती रहूँ। इतना करने के लिए आपसे रेस्तराँ में चाय।

फिर कुछ रुककर—लौटकर यह काम वकील को सौंपना ठीक होगा।

ठीक कह रही हैं। वह इन दिनों यहाँ है नहीं। परिवार में कोई नहीं है सो आवाज देने की मेरी विवशता है।

ईशान के शब्दों ने आरण्या के हलकेपन को खींच लिया। चिंता से कहा—मुझे भी तो कुछ करना है।

चेहरा कुछ ऐसा कि कोई निर्णायक क्षण ही आ झुका हो।

फिर अपने को उबारने के लिए कहा—

हो सकता है हमारे जाने की तिथि भी एक हो!

और कुछ भी बताएँ जो एक-सा हो।

मेरी माँ का नाम दुर्गा था।

और आपकी का?

दुर्गा ही। हाँ, पिताओं के नाम जरूर अलग होने चाहिए नहीं तो आइडेंटिटी का घपला हो सकता है। यहाँ नहीं, ऊपर।

गहरी हँसी दोनों की।

साढ़े चार, सुबह ही घर से निकलूँगा। बहादुर छुट्टी पर है सो ताली आपके पास छोड़ने की सोच रहा हूँ। इतनी जल्दी आपको उठने में परेशानी तो न होगी।

नहीं। मैं तब तक सोती नहीं। चाय पी रही होती हूँ।

ईशान गंभीरता से बोले—नियमानुसार कुछ काम करने जरूरी हैं। रात का सोना सबसे जरूरी। हाजमा ठीक से काम नहीं करता।

खासी गुजर चुकी। फिर पैदा होंगे तो देखेंगे। कितना अच्छा होता अगर कुछ बरस देर से आगमन हुआ होता तो अगली शताब्दी का भी मजा लिया जा सकता था।

दोनों सयाने एक-दूसरे को युवाओं की तरह देखने लगे। जैसे मन ही मन कहते हों—हाँ, हो तो सकता था!

तीन

हफ्ते-भर बाद पत्र मिला :

प्रिय आरण्या,

अब तक कबूतरों का दानापानी खत्म हो चुका होगा। ताली तुम्हारे पास है सो

यह तकलीफ भी तुम्हें ही देनी होगी। बालकनी में मिट्टी के प्याले पड़े हैं। उनमें बाजरा और पानी भर दें! किचन की खिड़की के पास पाइप पड़ा है। अगर गमलों को पानी दे सकीं तो आभार मानूँगा।

—ईशान

दस दिन बाद एक और पत्र :

प्रिय आरण्या,

इस बीच जल्दी लौटने का मन बना था, फिर किसी कारणवश रुक गया।

पिछली बार की तरह ही कबूतरों के लिए प्रार्थना कर रहा हूँ। वही कर दें जैसे पहले करती रही हैं। अपने मित्र द्वारा बनाया हुआ एक कार्ड भेज रहा हूँ। आशा है पसंद आएगा।

मेरे मित्र अस्सी से ऊपर हैं। अपने को कुछ-न-कुछ करने में व्यस्त रखते हैं। उन्हें मिलने गया तो तख्तपोश पर बैठे कार्ड पर पत्तियाँ चिपका रहे थे। इतनी एकाग्रता से कि उन्हें देखकर लगा कि अकेलापन ही संपूर्णता है! संपूर्णता का अनुभव तो आपको भी होगा। उन्होंने जब कार्ड बनाकर मेरी ओर बढ़ाया तो मोरपंखी की कटावदार पत्तियाँ मुसकराने-सी लगीं।

मुझे दो कार्ड भेंट किए—एक आपके लिए!

आशा है आप सकुशल हैं और खुश हैं!

—ईशान

शाम आरण्या बाजार से बाजरा ले आई।

दरवाजा खोल कबूतरों को दाना डाल दिया।

नल में पाइप लगाकर पौधों को पानी दिया। रबर का पौधा हरा है। विद्या के लंबे हरे-हरे पत्ते भी।

एक नजर इधर-उधर मारी। घर में अतिरिक्त कुछ नहीं। मितव्ययिता। जैसे जीने-भर को जिया जा रहा हो—सुविधाओं को नहीं। शेल्फ की ओर झाँका। कृष्णमूर्ति भी। नहीं-नहीं, यहाँ किसी दुख की छाया नहीं। परिंदे चहक रहे हैं। अकेले घरों का एकांत भरे-पूरे घरों से कितना अलग! झीना मगर सुथरा! और घड़ी के साथ-साथ धड़कता हुआ।

और—और अकेला।

अकेला ही।

परिचित हूँ न इससे—तभी देख पा रही हूँ।

आरण्या ने हाथ में बोर्डिंग कार्ड लिया और कुर्सी छोड़ खड़ी हो गई। इस अनाउंसमेंट के साथ ही अनगणित स्थगित इकाइयाँ गतिमान हो गईं। चुस्त सरकते कदम, कंधों पर लटकते बैग और हाथ में बोर्डिंग कार्ड। भुवनेश्वर, भोपाल और दिल्ली जाने वाली फ्लाइट नंबर

आई. सी. 434 के यात्रियों से निवेदन है कि वे गेट नंबर दो की तरफ प्रस्थान करें।

एयरपोर्ट की निरंतरता। अनोखा है यह आवागमन का जादू। आ रहे हैं–जा रहे हैं–चैक इन-सिक्योरिटी लौंज–इंतजार और फिर बोर्डिंग के लिए प्रस्थान! यात्री...यात्राएँ... हर रोज, हर दिन, हर रात–यहाँ कोई वक्त असाधारण नहीं–सूरज उदय होता हो या ढलता हो–शुक्ल पक्ष हो या कृष्ण पक्ष हो–फ्लाइट्स आकाश को मापती हुई लैंड करती चली जाती हैं। दुनिया-भर के एयरपोर्ट दिन-रात गुंजान रहते हैं। सुखद है कि हम सयानों को भी यह हवाई कंसेशन उपलब्ध है! इसे पा भी लेना सिर्फ दो दिन में! विलक्षण!

कनॉट प्लेस के एयरलाइंस ऑफिस के काउंटर पर का अनजान चेहरा आँखों में घूम गया! कार्ड आरण्या की ओर बढ़ाते हुए उसने शुभकामनाएँ दी थीं। कार्ड की जन्म-तारीख देखकर उसे जरूर अंदाजा रहा होगा कि कंसेशन-फार्म वरिष्ठ, पुराने नागरिक के लिए लगभग कितनी देर कारगर होगा! यह वह श्रेणी है जिसकी हर रियायती यात्रा संयोग पर निर्भर है।

फ्लाइट तीन घंटे लेट थी। बारह बजे पालम पर उतरेगी। घर तक पहुँचने में एक घंटा और।

घर पर पंद्रह दिन की अनुपस्थिति के बाद। सफाई के लिए ताली भी किसी को नहीं सौंपी! वह ईशान के पास ताली छोड़ना चाह रही थी लेकिन देने गई तो दरवाजे पर बहादुर मिला था।

साहिब हैं क्या?

जी नहीं। कल सुबह की फ्लाइट से आ रहे हैं। कुछ काम?

नहीं। शुक्रिया।

आरण्या ने ताली पर्स में ही रहने दी।

बिना सफाई के भी सोफे पर सोया जा सकता है। जरा-सी लापरवाही और मुस्तैदी में मालिक के समेत सब कुछ का सफाया भी हो सकता है। दिल्ली की धूल से इतने परहेज बहुत महँगे पड़ा करते हैं। खिड़की वाली सीट पर से बाहर देखने पर अंतहीन अंधकार का विस्तार! विमान का एक पंख दीख रहा है जिस पर उड़ान अनोखी गरिमा और गति से आसमानों में फैली दूरियों को समेट रही है! बीच-बीच में चमकते तारे दीखते हैं। ऊपर इतने सितारे कि धरती का हर प्राणी एक-एक को अपना मान ले।

जो भी हो इस सृष्टि का हिसाब-किताब ऊपर वाले के हाथ में। वही इस आवाजाही विभाग का अध्यक्ष है।

आरण्या कुछ देर पत्रिकाएँ पलटती रही। स्वागतम् देखा, फिर आँखें मूँद लीं।

पंद्रह दिन की अनुपस्थिति के बाद घर में कुछ मिलेगा क्या! हाँ–चाय का प्याला! चाय, पाउडर मिल्क, बिस्कुट!

कोणार्क का भव्य मंदिर आँखों के आगे आ खड़ा हुआ। देखने का सुख और संतोष! पुराने गाइड का दिलचस्प वाक्य-विन्यास! देखिए–अंदर पत्नी खड़ी है, बाहर दूसरी औरत

उसकी राह देख रही है। पति उसे संकेत दे रहा है और पत्नी का वैमनस्य-स्तोत्र शुरू हो जाता है। स्त्री का घृणा-पुराण!

आरण्या मन-ही-मन हँसी थी। इसके बाद गाइड ने दिखाई थी वह वाटिका जहाँ घर से निकल पुरुष मन की शांति के लिए विश्राम कर सकता था।

बंद आँखों ने स्वयं ही दृश्य पलट लिया! सागर, लहरें और भीगी रेत से अटा तट!

लहर आई और उसकी जूती समेट ले गई! उसके लौटने के इंतजार में वह देर तक खड़ी रही थी!

यह क्या!

नींद में देखा एक मजबूत, कड़ा हाथ उसके पर्स पर है! सिर्फ हाथ! चेहरा कहाँ है! चीखकर कहा—कौन हो तुम?

हड़बड़ाकर आँखें खोलीं और पाया, अपना ही हाथ पर्स के हैंडल को कसकर पकड़े हुए है।

दिन-भर घूमना और शाम इस उड़ान के लिए इंतजार। थकन नहीं तो एक साथ ऐसी उत्तेजना और पस्ती का क्या कारण हो सकता है!

आरण्या ने पर्स खोला। पहले सब कुछ चैक किया, फिर पर्स के अंदर का उलट-फेर शुरू हो गया। रुपयोंवाला दोहरा बंद लिफाफा बड़े खाने से अंदरूनी छोटे में रख लिया। बाहर की बड़ी जिप खोलकर कुछ चेंज रखी। अंदर की चोर पॉकेट में रिजर्व रखे नोट डाल दिए। आश्वस्त होने को काम्पेक्ट निकाल चेहरा देखा। बाल ठीक किए और बेचैनी की वजह खोजने लगी। वहाँ सब ठीक हुआ। लोग खुश थे। सौम्य और उनकी पत्नी और भुवनेश्वर का जागरूक समुदाय। समारोह के बाद उसके मन में नरम-सी हवा चलने लगी थी। जैसा चाहा था आयोजन वैसा ही संपन्न हुआ। और अब उभरकर चटखने लगीं भूली-बिसरी पुरानी यादें!

धीमे-धीमे किसी मुखहीन आकृति की तरह मन में कुछ रेंगने लगा! सब कुछ अप्रत्याशित और बेमौसम। खिड़की से बाहर आँखें गड़ा लो। जाने कहाँ तक फैला आकाश दिन में अपने को धूप में व्यक्त करता है—दर्शाता है और रात को गुपचुप एकांतों के रहस्य को और गहरा देता है।

अब हमारी उड़ान का कंसेशन अपनी रियायती दिशा-मंजिल की ओर उन्मुख है।

एयर-होस्टेस की आवाज गूँजी।

हम लोग कुछ ही देर में पालम पर उतरनेवाले हैं। कृपया कुर्सी की पेटी बाँधे रहें। यात्रियों से निवेदन है कि वह ऊपर के काम्पेक्ट न खोलें। आशा है आपकी यात्रा सुखद रही। बाहर का तापमान आठ डिग्री सेल्सियस है।

रन-वे पर सरकता वायुयान स्थिर हो गया। हलचल! बीच के पैसेज में यात्रियों का क्यू नीचे की ओर बढ़ रहा है।

प्रवेश द्वार पर सुंदर-सजीली एयर-होस्टेस हाथ जोड़ मुस्कराकर नमस्कार कर रही है! शुभरात्रि।

नीचे पहुँच जल्दी-जल्दी पैसेज पार किया। ट्राली खींची। ट्राली पर हाथ टेके सामान का इंतजार किया। सूटकेस और बैग ट्राली पर रख टैक्सी का कूपन लिया और ट्राली खींच बाहर आ गई।

अब पैरों में अतिरिक्त तत्परता और आँखों में चौकन्नापन! सूटकेस और बैग डिक्की में रखवाया और पर्स कंधे पर लटकाए टैक्सी में बैठ गई।

सड़क लंबी, जानी-अनजानी। हर बार सफर को जाते और लौटते हुए—घर पहुँच जाने का उत्साह।

कभी सफदरजंग हवाई अड्डे के रेस्तराँ में चाय पीने के लिए कितना चाव हुआ करता था! हाथ में चाय का प्याला लिये—सामने हवाई पट्टी पर से उड़ानें भरते जहाज, उड़ाकुओं को प्रशिक्षण देते। अब कितनी पुरानी बात लगती है! जगमगाती बत्तियों की आँख-मिचौनी! वह दिन, वह मौसम क्या हुए! कहाँ गए। कहाँ गए अपनी उम्र के वह ताजे दशक! आरण्या ने अपने को घुड़का! क्या सचमुच तुम्हें नहीं मालूम कि वह दिन इस शहर के भूगोल में कहीं खो चुके!

बरसों-बरसों स्टेशन या एयरपोर्ट से लौटना और अपने को, घर को मुसाफिरी में ढाल लेना।

छोटी-बड़ी कोशिशों के उघड़ने के दिन। चाहतों और सीमाओं को संग-संग अबूर करने के दिन! युवा दिनों का उत्साह और उखड़े-उलझे दिनों का खुरदरा निर्वाह। आर्थिक बोझ और क्षमताओं का विस्तार एक साथ। दोनों पलड़े बराबर दीखते मगर कभी यह ऊपर, कभी वह ऊपर।

घड़ी में पाँच बजते और दफ्तर की सिरदर्दियाँ मेज की ड्रार में बन्द कर दी जातीं।

कल।

मित्रताएँ सड़कों को मापतीं और उन दिनों मंजिल होती कनॉट प्लेस। रेस्तराँ के चुनावों के फुरफुरे खूबसूरत दिन!

स्टैंडर्ड, गेलार्ड, वोल्गा, एम्बैसी, लाबेहेम, निरूला, यॉर्क, गिंजा, एल्पज मेडंस। महीने के अन्तिम सप्ताह में काफीहाउस या टी हाउस। कटौतियाँ और खर्च एक साथ।

कहाँ का बैंड अच्छा है, पाइन ऐप्पल और जंगल डीलाइट पेस्ट्री कहाँ की बेहतर है, चीज बाल और पनीर पकौड़े कहाँ के मनपसन्द हैं। किस रेस्तराँ के सैण्डविच और फ्राइड-फिश; वैंगर्स की कोल्ड ड्रिंक मिडनाइट ब्यूटी और सिन्धिया हाउस वाले मिल्क बार की डस्टीरोड आइसक्रीम।

मौसमे बहार के वह सुहावने दिन!

इतवारी सुबह की बैठक 11 बजे की काफी पर जुड़ती और लंच तक खिंच जाती। कभी लंच ले रहे होते तो सिनेमा टिकट जेब में होते! प्रोग्राम बनते सलीके से और सलीका उभारा जाता गिनी-चुनी तन्ख्वाही रकम में। न रत्ती भर कम और न ज्यादा। नई दिल्ली का वेतनभोगी वर्ग और उसके संस्कार सँवार—सब एक-दूसरे से उलझे रहते। खर्च के मीटर

पर निगाह बनी रहती और सावधानी से किया जाता छोटी-बड़ी सुविधाओं का सत्कार।

नई-पुरानी दिल्ली अपनी घनी सजीली छब में हर हाल में अपनी सूरत और सीरत सँभाले रहती। आजादी के साथ ही राजधानी में बाढ़ की तरह एक रेला उठ आया। आक्रामक विस्थापितों के ठट्ठ के ठट्ठ। यहाँ-वहाँ सब जगह। शहर के हर इलाके में। दिल्ली-निवासी शरणार्थियों की भीड़ से परेशान और गाँव-कस्बों और शहरों से उखड़े हुए आक्रामक शरणार्थी—दिल्ली के सुसंस्कृत मिजाज में धूल-भरी आँधियाँ चलने लगीं।

देखते-देखते पटरी पर लगती तरहदारी दुकानों के अन्दर जा पहुँची। पगड़ी। दुकानों के पुराने मालिक नई दिल्ली की ओर बढ़ने लगे।

शहर में चलती ट्राम और किनारे-किनारे बिछी उसकी पटरियाँ देखते-देखते गायब हो गईं। चाँदनी चौक के पेड़ों की कतारें काट कर गुम कर दी गईं। पटरियों पर सिगड़ियाँ जलने लगीं। दाल और रोटी पकने लगीं। लाल किले का लाहौरी दरवाजा खामोशी से देखता रहा। और देखते रहे दिल्ली के बाशिन्दे भी। शहर को घेरे हुए पुरानी फसील के कई हिस्सों का सफाया हो गया। पुरानी दिल्ली वालों की शहर से बाहर बनी बगीचियाँ तेजी से बिकीं और देखते-देखते मास्टरप्लान में गुम हो गईं। गाँव की कायापलट हो गई।

दिल्ली अंचल में फैले 304 गाँव बड़ी-बड़ी बस्तियों में तब्दील हो गए! उनके नाम पर रह गईं सड़कें या छोटी-छोटी दुकानें।

और उन्हीं की तरह उन दिनों के हम ताजे नागरिक हम जैसे सयानों में बदल गए।

वक्त की रफ्तार।

दौड़ में थे तो अन्दर थे। दौड़ से बाहर हैं तो बाहर। निपट बाहर! टैक्सी की तरह भाड़ा देकर बैठे हैं उसके अन्दर और सड़कों को तय करते हुए भी सड़कों से अलग।

नए वक्त और पुराने हम।

चुप्प! क्या बीत गए को याद कर अपने में निराशा जगा रही हो! दूर रहो इससे।

बाहर देखा—बत्तियों की कतारों में सड़कें दमक रही हैं। कभी किचनर हॉस्टल का यह इलाका वीरान हुआ करता था। अब दूतावासों की मौन आसूदगी और धीमे कोलाहल में रचा-बसा है।

आगे की सीट पर ड्राइवर और क्लीनर को दिलचस्पी से देखा। रात दस के बाद ड्राइवर को क्लीनर की जरूरत पड़ सकती है। उन्हें पीछे बैठी सवारी से भी खतरा हो सकता है। अकेली सवारी को कोई खतरा नहीं। टैक्सी प्री-पेड है। घड़ी पर नजर मारी। बारह बीस! कम-से-कम बीस मिनट और।

ओवरब्रिज की ढलान से गाड़ी तेजी से उतर रही है। जाड़ों की रात का अजब-सा डरावना मगर मोहक सन्नाटा।

सहसा ड्राइवर ने ब्रेक लगाई। गाड़ी जैसे किसी के हुक्म से रुकी हो।

आरण्या ने पूछा—क्यों ड्राइवर साहिब...

पिछली खिड़की के शटर पर खटखटाहट...

इससे पहले कि आरण्या कुछ सोचे, ड्राइवर ने हाथ पीछे फैला कर शटर नीचे कर दिया।

अपना सामान दिखाओ। इधर लाओ पर्स।

आप हैं कौन!

पुलिस।

अपना आइडेंटिटी कार्ड दिखाइए।

मेरी आइडेंटिटी जानना चाहती हैं, मैडम।

खोलकर बताऊँ?

चाकू चमका हाथ में। देखा है न यह!

हाँ, पर मेरे पास ऐसा कुछ नहीं जो तलाशी के लायक हो।

जिरह बंद करो...

मजबूती से पकड़ा पर्स मजबूत हाथ से खींच लिया गया।

डिक्की खोलो। आवाज कड़की।

क्लीनर ने तेजी से नीचे उतर डिक्की खोल दी।

सामान उठा लिया गया और पिछली सीट का दरवाजा बंद हो गया।

जाओ छोड़ दो इस मुर्गी को इसके घर। रास्ते में कम्पलेंट को रुकी तो पुलिस चौकी से वापस नहीं जाएगी।

संतरी की परछाईं अभी भी वहीं खड़ी थी।

गाड़ी स्टार्ट हो गई।

ड्राइवर ने गर्दन पीछे मोड़ी–वर्दी में जरूर थे मेम साहिब, पर असली पुलिस नहीं।

अगले मोड़ को पार करने के बाद कहा–ड्राइवर साहिब, यह तो प्री-पेड टैक्सी है न!

मैडम, हम क्या कर सकते थे! पुलिस की वर्दी में लुटेरे रोक लें तो बताइए हम क्या करें! चाकू तो आपने भी देखा था न! मैडम, मुफ्त में जान गँवाने से फायदा?

मिलीभगत!

उनके इशारे पर गाड़ी तो आपने ही रोकी।

ऐसे में हम क्या कर सकते थे मेमसाहिब?

आप न रुकते तो वह कैसे पीछा करते, वह तो पैदल थे।

जी नहीं, दूर गाड़ी खड़ी थी।

मैडम, सामान जरूर आपका गया है लेकिन आपके साथ कुछ इतना बुरा नहीं हुआ। यह लोग जो कर गुजरते हैं–क्या बहुत कीमती सामान था, मैडम? कैमरा, जेवर...

बकवास बंद करिए–और गाड़ी पुलिस स्टेशन ले चलिए।

हम आपको पुलिस स्टेशन से दूर उतार देंगे। हम इस चक्कर में नहीं पड़ेंगे। हमारे काम का वक्त है।

आपको जाना पड़ेगा।

आरण्या अपने दबाव में थी। प्री-पेड टैक्सी की एंट्री है।

ड्राइवर साहिब ने इस बार हमदर्दी से कहा—मेम साहिब थाने में बैठे-बैठे टिटुर जाएँगी—किसी को फोन करना चाहेंगी तो फोन चालू नहीं मिलेगा। थाने में-देने-दिलाने के लिए आपके पास कुछ भी नहीं है। ऐसे हाल में आप जैसी सवारी का घर पहुँच जाना ही ठीक है।

आरण्या के कानों में अपने ही कलेजे से गोली की आवाज सुन पड़ी। काश कि मेरे पास लाइसेंस होता! पर नहीं है।

उसने पटरी बदल ली।

बाहर सड़क की ओर देखा।

गाड़ी घर की ओर बढ़ रही थी।

अगर कोई फ्लाईंग स्क्वैड गुजर जाता!

फाटक पर चौकीदार ने रुकने के लिए हाथ दिया। रजिस्टर उठाया।

आरण्या ने ड्राइवर से कहा—गाड़ी यहीं रोक दें!

साहब, सामान लिफ्ट तक ले जाने में दिक्कत होगी...

सामान नहीं है।

फाटक के अंदर पहुँचते ही एक लंबा साँस लिया।

घर की चाबी भी पर्स में ही थी।

कुछ देर असमंजस में लिफ्ट के आगे खड़ी रही फिर दूसरे ब्लॉकवाली लिफ्ट की ओर बढ़ गई।

ईशान की बैल बजाने के अलावा कोई चारा नहीं।

एक बज चुका है!

कहीं और!

नहीं। कहीं भी और जाने का वक्त नहीं।

आरण्या ने घंटी पर हाथ दिया।

बजती रही देर तक!

दरवाजा खुला।

इस समय!

ईशान की आवाज में विस्मय और रुखाई दोनों ही। आँखों में अजीब-सा उनींदा अटपटापन!

एक बज चुका है। क्या फ्लाइट लेट थी?

जी।

और सामान कहाँ है?

कुछ गड़बड़ हुई। कल सुबह बात करेंगे। हाँ, मुझे यहीं रुकना होगा! घर की ताली नहीं है! इसीलिए यहाँ—

ईशान आशंकित मगर खामोश हुए रहे।

उड़ते हुए क्षण की सोच के बाद कहा–

गैस्टरूम में बिस्तर बदला हुआ है। आज धोबी के आने का दिन था। रजाई पतली है–कंबल और चाहिए होगा।

ईशान अपने कमरे की ओर गए–अलमारी खुलने की आवाज और कंबल सोफे पर रख दिया गया।

घंटी की आवाज सुन सका–यह अच्छा हुआ–फ्रिज में कुछ फल हैं। चाहें तो आप चाय बना सकती हैं। दूध, चीनी, सब सामने शेल्फ में मिल जाएँगे।

अच्छा। गुडनाइट।

गुडनाइट...

खाने की मेज पर पड़ी ट्रे। दो गिलास। नीबू। शहद। थरमस और छुरी। चम्मच।

नए दिन की शुरुआत।

आरण्या कुछ देर ड्राइंगरूम में खड़ी-खड़ी देखती रही।

पर्स नहीं–ताली नहीं! ताली बहादुर को सौंप दी होती तो रात घर में सो सकती थी।

संदेह से देखने लगी थी वह बहादुर के विश्वास को। अकारण शक करने का नतीजा ऐसा ही होता है। क्या सोचा था कि कोई बहादुर-सा आदमी बहाने से तुम्हारा घर उड़ाकर ले जाएगा!

नहीं। मात्र अपनी सुरक्षा का मामला था।

क्या पता सामान लौट-पलटकर मुझ तक पहुँच ही जाए! कभी जी.पी.ओ. पर एक बॉक्स लगा रहता था। चुराए गए खाली बटुए, पासपोर्ट, तालियाँ जेबकतरे उसमें डाल जाते थे। कीमती सामान–पैन, घड़ी, नकदी को छोड़कर किसी को परेशान करने में दिलचस्पी उन्हें न थी। क्या अब भी ऐसी शिष्टवृत्ति बाकी होगी?

कहाँ भटक रही हो! यह पॉकेटमार नहीं, लुटेरे हैं! कौल साहिब को फोन कर सकती थी। इस वक्त!

नहीं। एक तीस हो चुके हैं!

हल्की-सी प्रभाती नींद के बाद आँख खुली।

हाथ बढ़ा टेबल लैंप ऑन किया।

साढ़े चार।

सो जाओ।

करवट ले आरण्या फिर बेखबर हो गई। सामान खो जाने की थकन।

कुछ बटोरने को मानो हाथ बढ़ते हों और खाली लौट आते हों। कहाँ होंगे मेरे कपड़े! शायद कबाड़ी बाजार में बिकेंगे। नहीं–इस हफ्ते नहीं–इतनी जल्दी नहीं। वक्त लगेगा। जरूरी नहीं इसी शहर में–उन्हें पहनेगा कौन!

बाथरूम में जा हाथ-मुँह धोए। बार-बार। जैसे पिछले कुछ घंटों का प्रदूषण धो लिया जाना जरूरी हो। ताजे तौलिये से मानो संतोष का स्पर्श किया हो।

अपने अंदर ताजगी महसूस की। किचन में जाकर चाय बनाई और घूँट भरते हुए अपने को अपना-सा महसूस करने लगी। सपना! वह पूर्वाभास था! मेरे पर्स पर पड़ा वही मजबूत हाथ था! पहुँच रहा था मेरी ओर! मुझे पुलिस स्टेशन जाना चाहिए था। रिपोर्ट लिखवानी चाहिए थी। मगर इसकी गुंजाइश ही नहीं थी। जेबी टार्च भी होती तो एक बार उन वरदीवालों का मुँह-माथा तो देख लेती! ड्राइवर और क्लीनर उन्हीं के साथ थे, उनसे अलग नहीं, बाहर नहीं। उस पर पुलिस की खाकी गर्म वर्दी।

शायद संडे बाजार में खोज सकती हूँ अपने कपड़े! वहीं बिकेंगे। वहीं पटरी पर।

वैसे भाई लोग सूटकेस खोलकर निराश ही होंगे। पहनने के तीन जोड़े। शाल, जर्सी, बैग में दो फाइलें और पर्स में हजार-भर। साथ ही सीनियर सिटीजन का रियायती कार्ड।

ताली को भूल रही हो! वही है तुम्हारी सब से बड़ी सिरदर्दी! खतरे से खाली नहीं। ताला बदलवाना पड़ेगा। खर्चे के अलावा दौड़-भाग करनी होगी सो अलग।

अचकचाकर सामने देखा। खिड़की के काँच पर लहरा रही है कोई परछाईं। हवाएँ-हवाएँ, जीवन में ऐश्वर्य और दरिद्रता एक साथ। चुप्प! यह किसी भी रहस्योद्घाटन का समय नहीं!

सन्नाटे के शोर को अपने में खोजो। वही तुम्हारा निज का आख्यान है।

जो भी है मैं अपने अंदर एक गहरी तृप्ति महसूस करती हूँ जो किन्हीं भी संबंधों और मित्रताओं से अलग है।

फिर क्यों उन्हें आवाज दे रही हो जो खुद तुम्हारे अंदर तुम्हारे विरुद्ध घात लगाए रहते हैं।

मुझी में मेरे कई संस्करण छिपे हैं। अक्सर नहीं दीखते। दीखते हैं तो मुझी पर गुम हथियार दाग देते हैं!

क्या कोई दुश्मन।

नहीं, कभी-कभी विपरीत की मैत्रियाँ भी मैत्री नहीं उभारतीं।

और ईशान।

एक सघन सजग परिचय।

वह हाथ कैसे दीखा मुझे! मैं तो उड़ रही थी। जमीन पर नहीं थी।

पाँव में गर्मी महसूस की। कंबल से बाहर निकाल लिये पैर और गले तक अपने को ढाँप लिया।

अपने ही फ्लैट का-सा कमरा। वही नक्शा, वही माप, वही आकार...फिर भी नया!

नया क्या है भला इसमें!

अब आराम करो।

टैक्सी वारदात को अपने बाहर छोड़ दो। बारीक अँधियारी आहटों से बुनी रात की आवाजें!

कार का स्टार्ट होना।

फाटक से अंदर आती गाड़ी पर ब्रेक–चौकीदार के जूतों का शोर–

ईशान के गैस्टरूम का गहराता ग्रे सन्नाटा। अपने घर से अलग एकांत। पारदर्शी। अपने यहाँ का गाढ़ा-गुत्थीला ग्रे जाने अपने में क्या-क्या सोखे हुए!

हम दोनों में कितना फर्क।

वहाँ अपने सिवाय सभी कुछ लीक से आजाद और यहाँ अनुशासन की मूठ में करीने और कायदे से स्थित।

आँखें खोलीं तो बालकनी से अँधियाली रोशनी छिटक उठी थी। दरवाजे पर लटकती ताली ने जैसे ढाँढ़स बँधाया। मेरी खो चुकी है–यहाँ की दीख रही है।

ईशान कुछ गुनगुना रहे हैं। किन्हीं प्राचीन पंक्तियों का उच्चारण कर रहे हैं।

मेरी सुबह की शुरुआत से कितना दूर और अलग।

तनोतु क्षेमं नस्तववदन सौंदर्य लहरी
परिवाह स्रोतसरणीव सीमान्तसरणी।
बहन्ती सिन्दूरं प्रबलकबरी भारतिमिर
द्विषां वृन्दै बन्दीकृतमिव नवीनार्क किरणम् ॥
तवाधारे मूले सह समयया लास्यपर्यया
नवात्मानं मन्ये नवरस महाताण्डवनृतम्।
उमाभ्यां एताभ्यां उदयविधिमुद्दिश्य दयया
सनाथाभ्यां जज्ञे जनकजननीमदिदम् जगत् ॥

दुर्गास्तुति प्रभात के एकांत में गूँजती रही। आरण्या सिरहाने पर सिर डाले अपने चाय के प्याले की तलब को याद कर मुसकराई। उसके सिवाय कोई और नित नियम तुम्हारा नहीं।

संस्कारी और संस्कारविहीन। दो अलग-अलग किस्में–जातियाँ।

सुहाती झोंक में लगा कुछ हलचलों के बाद बाहर का दरवाजा बंद हुआ है।

ईशान सैर के लिए निकल चुके हैं।

लौटने तक इंतजार करना होगा!

लेटे-लेटे नजर एक बार फिर ताली पर पड़ी। दरवाजा खोल बाहर जा सकती हूँ और इसी ताली से अपना गैस्टरूम खोलने की कोशिश कर सकती हूँ। अंदर से चिटकनी लगी हो तो कुछ भी कारगर नहीं होगा।

आरण्या उठ खड़ी हुई।

बिस्तर बना बेडकवर डाला। कंबल तिहा कर पैताने रखा और बाहर निकल ताली से दरवाजा बंद किया और वाक-वे से होती हुई अपने फ्लैट पर जा पहुँची।

गैस्टरूम के दरवाजे पर ताली घुमाई और दरवाजा खुल गया।

एक लंबी साँस निश्चिंतता की।

ताली निकाली। कमरे के अंदर से घुमाई और वहीं लटकी रहने दी।

तालियाँ छीन ली जाती हैं। गुम हो जाती हैं। फिर कहीं न कहीं मिल भी जाती हैं।

दीवान का कवर झाड़ा और सिरहाना दोहराकर रजाई खींच ली। बिछौने में जैसे अपने घर की सुगंध उमगने लगी। उसी से घिर आई सुबह की नींद।

घर।

चार

हैलो।

हैलो...

फोन पर ईशान थे।

बहुत दिन से हम लोग मिले नहीं। मालूम था आप व्यस्त हैं सो आपको परेशान करना ठीक नहीं समझा।

कैसी हैं!

अच्छी हूँ!

आरण्या हँसी।

आपके कहे मुताबिक दूध के साथ हल्दी खा रही हूँ।

ऐसा! क्या पूरा वक्त यही चल रहा है?

नहीं-नहीं, ऐसा नहीं पर इन दिनों हरी हल्दी लेना दिनचर्या का मुख्य अंग तो है ही।

वाह! क्या बाकी सब गौण कर दिया है?

जी नहीं, पहले हल्दी छीलो, पीसो। प्याले में डालो। दूध मिलाओ। ऊपर से शहद का चम्मच! बोतल का ढक्कन भी तो खोलना पड़ता है! तब कहीं जाकर चम्मच मुँह तक पहुँचता है। शुक्र है खरल में पीसना नहीं पड़ता।

लगता है आप बहुत आलसी हैं!

हूँ तो।

खाने का आधा सुख उसे तैयार करने में है।

होगा जरूर पर मैं अपने को उससे कुछ दूर ही रखती हूँ।

मैं अपना सब काम हाथ से करना पसंद करता हूँ और संतोष पाता हूँ!

सचमुच में आधुनिक हैं। नहीं तो प्राचीन भारतीय गृहस्थों की तरह–सब कुछ दूसरे करें। आपके एक काम में दस हाथ जुटे हों तो आपका रुतबा सुरक्षित है।

ज्यादा चाय सेहत के लिए अच्छी नहीं।

जी हाँ, सेहत के लिए ही–

क्यों न हल्दी में दूध मिलाकर एक दूसरे के स्वास्थ्य की कामना करें।

उल्लास–उल्लास–आयुर्वेदिक उल्लास!

दोनों कई देर हँसते रहे।

ईशान ने याद दिलाया। टेलीफोन का बिल आ गया है न। अभी तक दिया न हो तो चैक नत्थी कर मेरे लैटर बॉक्स में डाल दें। मुझे कल देने जाना है।

धन्यवाद ईशान, मेरे सिर से एक बड़ी सिरदर्दी उतर जाएगी।

क्या सचमुच इसे एक बड़े विशेषण की जरूरत है।

अपनी लापरवाही के चलते तो है ही। बिल आते हैं, देखती हूँ और सँभालकर रख देती हूँ कि भूल न जाऊँ। भूल जाती हूँ, फिर नया बिल बनवाने के लिए क्यू में खड़ा होना पड़ता है।

टैग में डालकर दीवार पर लटका दिया करें। आँखों के सामने होगा तो याद रहेगा।

इसे भी आजमाकर देख लूँगी।

नाश्ता हो चुका?

अभी नहीं।

ग्यारह बज चुके हैं। सुबह के नाश्ते को गंभीरता से लेना जरूरी है।

आप ठीक कह रहे हैं पर मैं अपनी बुरी आदतों से छुटकारा अब कहाँ पा सकती हूँ।

शाम फलों की दुकान से आरण्या ने फल खरीदे। फल उठा रही थी कि ईशान पहुँच गए।

संतरे, मौसमी, चीकू चुने।

आपके लिए भी ले रहा हूँ।

लीजिए। आरण्या ने लिफाफे आगे किए। मैंने भी अलग-अलग लिफाफों में अनार डलवाए हैं। यह आपके लिए। और यह मेरे लिए हैं।

धन्यवाद आरण्या। लौटा नहीं रहा हूँ। लगता है हम लोग कुछ एक-सा सोचते हैं।

तारीखें मिलती हैं न?

आरण्या शरारत पर उतर आई। तारीखें नहीं–सिर्फ एक तारीख–वह भी जन्म-तारीख।

उसी का असर समझ लेते हैं!

फलों से ईशान के दोनों हाथ भरे देख आरण्या ने मजाक किया–बापू ने कहा था कि खुले हाथों फलों पर खर्च करना सच्ची किफायतशारी है।

फाटक की ओर बढ़ते-बढ़ते ईशान बोले–किशोर को देखने जाना चाहता हूँ। नर्सिंग होम से लौट आए हैं। आप भी चलेंगी तो उन्हें अच्छा लगेगा।

मन-ही-मन कुछ चिंताएँ जाग उठीं। सफर की समाप्ति।

चाय पीकर चलें तो कैसा! हाथ में बोझा भी कुछ ज्यादा है। क्यों न मेरे यहाँ चलें। ताजे मुरमुरे बने हैं। सिर्फ केतली का स्विच ऑन करना है!

आरण्या को सोच में देखकर कहा–आज अपने यहाँ संदेश भी हैं। जानता हूँ आपको भाते हैं।

ईशान ने दरवाजा खोला। किचन में जा फल धोए-पोंछे—फ्रिज में रखे, और चाय मेज पर आ गई!

इतनी जल्दी!

जरा रंग आने दें! इतने में मिसेज किशोर को फोन कर देते हैं।

ईशान बोल रहा हूँ। कैसे हैं किशोर।

किशोर को असुविधा न हो तो क्या उनसे मिलने आ जाएँ। हाँ, आरण्या भी यहीं हैं। वह आएँ तो कैसा!

जरूर आइए। आप लोगों से मिलकर खुश होंगे। जाने क्यों चुपचाप पड़े रहते हैं।

हम दस मिनट में पहुँच रहे हैं, दोनों।

आरण्या दूसरा प्याला बना रही है अपने लिए।

बहुत गर्म चाय ठीक नहीं। लिवर और दाँतों को नुकसान करती है।

हूँ। बदन की पुरानी व्याधियों को भी उकसा देती होगी। स्वास्थ्य-संस्कृति बहुत विकसित हो चुकी है। इन दिनों इस पर काफी कुछ पढ़ता रहा हूँ। आपको कुछ अच्छी किताबें दे सकूँगा।

इस विषय में मैं कुछ कम-सा ही जानती हूँ।

इस उम्र में जानकारी बढ़ाने से फायदा होगा! छोटी-मोटी बीमारियों का इलाज बिना डॉक्टर के भी किया जा सकता है।

मैं कुछ गर्म पहनकर आती हूँ। पाँच-सात मिनट में लौट आऊँगी।

लिफ्ट ली। दरवाजा खोला। शाल ओढ़ा और सीढ़ियों से नीचे उतर गई। थोड़ा-सा व्यायाम भी बुरा नहीं। घड़ी देखी—अभी पाँच मिनट और—तेज कदम भर फूलवाले के पास पहुँची। पटरी पर रंग-बिरंगे फूलों का परिवार सजा था। काश, फूलों को भी शब्द उच्चारने की सामर्थ्य होती! क्या ये तब भी इसी तरह अपने को बिकने देते। बिकते! बिना कुछ कहे! मूक!

शायद नहीं! हमारी ज्यादतियों पर इन्हें एतराज होता।

फूलों का गुच्छा लिये आरण्या लगभग दौड़ती हुई लौटी।

सामने से ईशान चले आ रहे थे। आरण्या के हाथ में फूल देखे और बिना कुछ कहे ही अपनी सराहना उस तक पहुँचा दी। इतनी जल्दी।

दोनों ऊपर पहुँचे तो मिसेज किशोर ड्राइंग रूम में बैठी थीं। नर्सिंग होम में इलाज की पूरी तफसील दी। फिर आवाज को धीमा कर कहा—व्हील चेयर मँगवा ली है पर उस पर बैठने से कतराते हैं। ज्यादा बात नहीं करते। चुपचाप लेटे रहते हैं। सुनकर कि आप आ रहे हैं—जरा चौकस हो उठे। ड्राइंग रूम में आने को तैयार हो गए हैं।

मेल-नर्स ने व्हील चेयर को ईशान के पास ला खड़ा किया।

हैलो किशोर!

ईशान ने पास झुक हाथ छुआ!

पहले से बेहतर महसूस कर रहे हो न!

आरण्या ने उठकर फूल भेंट किए और मिसेज किशोर ने हाथ में लेकर किशोर से कहा–आपके लिए।

किशोर आरण्या को एकटक देखते रहे, जैसे पहचानने की कोशिश करते हों।

फिर मानो किसी अदृश्य लोक से आवाज आई हो–आप कैसी हैं!

फूलों की ओर देखकर–धन्यवाद!

मिसेज किशोर बोलीं–

नया जूता बनकर आया है। एक टाँग जरा सिकुड़ गई है। फिजियोथैरेपी से ही ठीक होगी।

ईशान किशोर की ओर झुके–

हाँ, हरकत से ही खून दौरा करेगा। तुम्हारे पढ़ने के लिए कुछ किताबें लेता आया हूँ। थकने की जरूरत नहीं–धीरे-धीरे जितना पढ़ सको।

पुराने किशोर लौट आए कहीं से–क्या तुम पढ़ चुके हो!

नहीं। अभी खरीदी हैं। सोचा, तुम्हारे बाद पढ़ लूँगा।

किशोर पर फिर गहरी थकन उतर आई।

अभी नहीं पढ़ सकता। ईशान, पहले तुम पढ़ लो।

ईशान, यह किसी चीज में दिलचस्पी नहीं ले रहे। किताबें यहीं रहने दें। मैं इन्हें पढ़कर सुनाऊँगी।

ईशान ने किशोर की ओर देखा–

चाहो तो कृष्णमूर्ति के कैसेट भिजवा दूँ!

किशोर कुछ नहीं बोले।

बेटी-दामाद इनकी अच्छी देखभाल कर रहे हैं। ऑपरेशन कामयाब हुआ है। हड्डी जुड़ गई है। अब इन्हें इतना निराश क्यों होना चाहिए!

नहीं। किशोर कोशिश करेंगे। उठकर चलने में पाँव की हरकत जरूरी है। अच्छा फोन करूँगा।

कमरे में एक लंबा मौन!

दरवाजे की ओर बढ़ते-बढ़ते आरण्या ने मुड़कर पीछे देखा।

किशोर न ईशान-आरण्या के हिलते हाथ देख रहे थे, न बाहर होते उनके कदमों की आवाज सुन रहे थे। उनकी नजर दरवाजे से बाहर दूर कहीं और टिकी थी।

शायद उन्हें अपने प्रियजन-संबंधी दीख रहे हैं जो उन्हें कंधों पर उठाकर वहाँ ले जा रहे हैं जहाँ से कोई लौटकर नहीं आता। इस संसार का वही अंतिम दृश्य जिसे जीते जी अपनी आँखों से कोई नहीं देखता और सब कोई देखता है।

कैसी है यह मुद्रा!

खेल खत्म हो जाने से पहले कोई ढूँढ़ रहा है अपने को उसी राह पर–आरण्या और ईशान दोनों चुपचाप नीचे उतर गए।

कोई कुछ बोला नहीं। अपनी-अपनी लिफ्ट की ओर बढ़ गए।

तीन दिन बाद–

ईशान का फोन था।

किशोर नहीं रहे। निगमबोध चलना होगा। क्या आप जाना चाहेंगी?

नहीं ईशान, मैं नहीं जा रही।

ईशान ने बिना कुछ कहे फोन नीचे रख दिया था।

आरण्या ने हस्तलिखित आलेख पढ़ा–कुछ गलतियाँ ठीक कीं। लिफाफा बंद किया और पता लिख दिया। अपने में कुछ नई-नई वृत्तियाँ उभर रही हैं। लिफाफे पर पता लिखना इतना मुश्किल क्यों लगने लगा है! भला इस आलस का भी क्या कारण?

कहीं ऐसा तो नहीं, कम्प्यूटर लेने का बहाना बना रही हो! नई मशीन को सँभाल सकोगी? उस पर काम कर सकोगी? आँख और गर्दन पर जोर पड़ेगा।

घंटी बजी। दरवाजा खोला और लिफाफा कूरियर को पकड़ा दिया!

शुक्र है इस काम से फुरसत हुई।

एक घंटा पूरा आराम!

घड़ी देखी–चार। अभी घंटा-भर और लेट लो। उसके बाद चाय।

सिरहाने पड़ी किताब उठाई।

जीने के लिए देह को परिवर्तन के पंखों पर उड़ना होता है। अपनी साँस के साथ खींच रहे हैं हम हाइड्रोजन के कण, ऑक्सीजन, कॉर्बन, नाइट्रोजन। आमाशय, हृदय, फेफड़े, दिमाग हवा में विलीन हो रहे हैं।

एक मास में त्वचा बदल जाती है। उदर की तिल्ली, हर पाँच दिन में लिवर, छः सप्ताह में पूरा कंकाल इस काया का। उस पर विलक्षण यह कि लगे कुछ भी बदला नहीं जब कि 95 प्रतिशत शरीर के अणु बदल जाते हैं। प्रतिस्थापित होते हैं और शरीर को नवीभूत करते हैं।

कोषाणु अपने लघु रूप में जुड़े हैं, शक्तिशाली कॉस्मिक कम्प्यूटर से। कॉस्मिक कम्प्यूटर–पराध्वनि संकेत! उस पर खूबी यह कि अकस्मात कुछ भी घटित नहीं होता।

हमारी देह उन सब अनुभवों का पुष्टीकरण है जिन्हें हमने जाना है। जिया है। मैं मात्र मैं नहीं : मैं वह सब भी हूँ जिसका अनुभव मैं अपने में सँजोए हूँ।

ईशान का पुस्तक-मार्क पड़ा है किताब में। आरण्या उठकर खड़ी हो गई। दर्पण में अपने को देखा। कितना कुछ बदला! क्या हुआ? कहाँ चला गया वह ढेर-सा समय। दशकों की गुणा! समय देह को कुतरता नहीं–उसमें रसता है। सारी धूल, मिट्टी, गर्दो-गुबार के साथ।

शंकालु हो अपने से पूछा–क्यों बरसों-बरसों जीने का आक्रोश समेट रही हो? नहीं–खुशियाँ और उत्साह भी। स्मृतियों के टुकड़े जिन्हें लौटाना अब न सरल है, न उलझा

हुआ। मानो कंठस्थ का उच्चारण कभी एक शब्द-भर, कभी शब्दों से कौंधती पंक्तियाँ, कभी अर्थों से झिलमिलाती सूक्तियाँ! जीने की यही गुणा है।

इनके पार कुछ देख रही हो क्या! अपने आगे किसी के न होने के बहाने–इस दुनिया का शृंगार, धूप-छाँह, हवा-पानी, चाँद-सूरज सब अपने में स्थित हैं और लिखित की पंक्ति में भी। देखने को क्या नहीं! आरण्या ने हाथ बढ़ाकर खिड़की खोली–बहती रहो। धूप-सनी हवाओ, जब तक जीती हूँ मुझ तक पहुँचती रहो! मैं अपने निज के समय को गुंजान रखना चाहती हूँ। जो भी प्रतिफलित है, सिरजित है, अक्षरों की क्यारी में उसी को अंकित करना चाहती हूँ।

कौन है जो अस्तित्व के दबाव में नहीं!
अग्नि पृथ्वी की मृत्यु से
वायु अग्नि की मृत्यु से
जल वायु की मृत्यु से
और पृथ्वी जल की मृत्यु से जीवित है।

आरण्या ने ओढ़ा हुआ कंबल सरका दिया।

घड़ी देखी। साढ़े चार। चाय।

किचन तक पहुँचकर मुड़ी। टेलीफोन उठाया। नंबर मिलाया ईशान का।

क्या कुछ समय बचा रखा है बेकार करने के लिए आपने! आपके अनुशासन में इसकी जगह तो नहीं दीखती।

ईशान हँसे।

आपका काम पूरा हो गया लगता है।

लिफाफा वाहक को सौंप दिया है। अब शाम के लिए फुरसत ही फुरसत है।

ईशान बोले–

तो आइए–आप आमंत्रित हैं चाय के लिए।

आरण्या उत्साहित हुई। जल्दी से कपड़े बदले। अपने में ताजगी महसूस की। दरवाजे की ओर कदम बढ़ाया ही था कि फोन बज उठा।

फोन बजने दिया। मन-ही-मन निर्णय लिया–मैं घर पर नहीं हूँ।

केक के दो पीस काट–कुछ नमकीन रखा। डिब्बा बंद किया और बाहर हो गई।

फोन लगातार बजता रहा था।

लिफ्ट नहीं चल रही।

दूसरे ब्लॉक की लिफ्ट ली और ईशान की घंटी पर हाथ रख दिया।

घंटी कई देर बजी।

ईशान दरवाजे पर आए।

आरण्या, देखा नहीं दरवाजा खुला था!

आरण्या अंदर आई। दरवाजा बंद किया और गंभीर होकर कहा–
अखबार तो हम लोग रोज पढ़ते हैं न! दरवाजे को खुला रखने की लापरवाही ठीक नहीं। जो भी दरवाजे पर है–इंतजार कर सकता है।

अगर मेरी जगह कोई दूसरा धड़धड़ाता हुआ अंदर चला आए–इस बात को अदेखा करना ठीक नहीं, ईशान! इसमें खतरा है! आरण्या ने अनायास अपने खाली हाथों की ओर देखा–ओह, मेरी ताली कहाँ है! दरवाजे पर लगी ही तो नहीं छोड़ आई!

अभी आती हूँ।

आरण्या फुरती से बाहर हो गई।

जैसे आई थी वैसे ही अपने फ्लैट तक पहुँची।

ताली दरवाजे पर लगी थी।

घुमाते हुए सोचा, एक बार अंदर झाँकना जरूरी है।

सभी कमरे देखे। दोनों बाथरूम किचन!

दरवाजा बंद किया तो हल्का महसूस किया।

शुक्र है।

इस बार ईशान का दरवाजा बंद था।

ईशान ने खोला और मुसकराकर कहा–अब तो ठीक है न!

हाँ, हर रोज, हर सुबह, शाम, दुपहर इसे खोलने-बंद करने में तनिक भी ढील ठीक नहीं।

मैं अपने दरवाजे पर दूसरा–ऑटोमैटिक लॉक लगवाने जा रही हूँ।

अगर उसकी ताली अंदर रह जाए तो मुश्किल!

उसकी डुप्लीकेट आपके पास रख दूँगी।

मैं आपको इसकी सलाह नहीं दूँगा।

क्यों भला?

अपनी सुविधा के लिए। आपका और मेरा वक्त दूसरे से मेल नहीं खाता।

आरण्या सतर्क हुई।

भला कैसे!

मेरे आराम का समय आपके काम का है और मेरे काम का आपके आराम का! हम दोनों को असुविधा होगी!

समझी!

स्वीकृति और अस्वीकृति के बीच खड़ी किसी अनजान सूक्ष्म से भयभीत दोनों एक दूसरे को जाँचते रहे।

आरण्या मन-ही-मन इस पर सोचती रही।

क्या चाय बनाएँ!

दो प्याले।

सामने रखे हैं केक, चने, मुरमुरे और हल्का-सा बना गज़रेला।

लीजिए–

आप लीजिए–

दोनों प्यालों में चम्मच हिलाते चले।

क्या अरब सागर में तूफान आने को है!

आरण्या हँसने लगी।

आ सकता है पर आपकी आँखों के शांत महासागर में तो इसकी कोई संभावना नहीं दीखती!

ईशान की मुखाकृति कुछ और-सी लगने लगी।

हम प्रतिद्वंद्वियों की तरह बात कर रहे हैं!

जहाँ तक अपने को जानती हूँ स्पर्धा में मेरी जान कभी नहीं अटकी।

स्पर्धा-भाव आपके तेवरों में हर समय उद्‌भासित है।

आप विरोधी दिशा से किसी भी चित्र का आरेखन कर सकते हैं, और उसे अपने सत्य के समक्ष स्थापित कर सकते हैं।

आरण्या ने ईशान के माथे पर अविश्वास की झलक देखी।

मेरी अल्पज्ञता एकांगी दृष्टिकोण की भी परिचायक हो सकती है। आप अपनी बात कहें।

अपनी मानसिक-शारीरिक शक्तियों का विकास अपने प्रकृतिजन्य और स्वभावजन्य साधनों से उचित है, मगर दूसरों को आतंकित करना नहीं।

आरण्या जोर से हँसी।

मुझे कहीं आतंकवादी तो नहीं समझ रहे ईशान! मैं एक अच्छी और भली आत्मा हूँ।

ईशान ने सिर हिलाया। आप ही नहीं हर किसी के पास अपने राग-अनुराग का निजी आख्यान होता है। और, आत्मा इन सबसे निर्लिप्त।

जरूर होगा, पर मैं आप-सी आत्मदर्शी नहीं हूँ।

आत्मनिष्ठ हो!

क्या यह नकारात्मक गुण है?

बौद्धिक तर्क-जाल!

तर्कशास्त्र सभी विज्ञानों का आधार है।

ईशान के माथे पर एक जटिल-सा तेवर उभरा और गुम हो गया। प्लेट में नमकीन डालकर कहा–क्या उपनिषद पढ़े हैं!

नहीं और हाँ, दोनों ही। पढ़ा है पर जीव, ईश्वर, प्राणी आदि की जटिल समस्याओं में मेरी रुचि नहीं। फिर कोई भी पलायनवादी सोच–

भारतीय चिंतन और दर्शन पलायनवादी नहीं है। उसने जीवन की समस्याओं को गठित मूल्य के दृष्टिकोण से देखा है।

दोनों एक साथ जैसे एक दूसरे पर हँसे हों।

उपदेश देने की प्रवृत्ति आप में जाग रही है।

इस संवाद को स्थगित करते हैं हम।

आरण्या ईशान का चेहरा टटोलती रही। फिर जैसे अपना ही मजाक उड़ाती हो–

इति रहस्यम्

इति उपनिषदम्!

ईश्वर दूसरा ईश्वर नहीं बना सकता।

ब्राह्मण अपने कौशल से अब्राह्मण को ब्राह्मण नहीं बना सकता–कहिए ईशान, इसके जवाब में आप क्या कहेंगे!

ईशान ने सख्ती से कहा–कुछ भी नहीं।

कुछ तो कहें। मैं आरक्षित कोटे से नहीं हूँ। शास्त्र की बात न समझ पाऊँ तो भी अपने मतलब की बात समझ सकती हूँ।

ईशान हँस दिए।

चलिए। इस चर्चा को परिवर्तित करें। राजनीति से नहीं, काली मिर्च, दालचीनी और शहदवाली चाय से। जीने के लिए अपने को तरंगित कर रहे हैं। हाँ, तुलसी का नाम तो भूल ही गई।

चाय पी ली गई।

अच्छा चलती हूँ। नीचे स्टोर से ईसबगोल की भूसी लेनी है।

आरण्या ने ईशान के चेहरे पर जाने कैसी ऊब देखी कि मिठास से कहा–तुकाराम के अभंग अपनी जगह और पेट की खुराफातें अपनी जगह। नियंत्रण जरूरी है। सच तो यह है कि पेट आतंकवादी है। सारा वक्त पूरे शरीर पर काबिज रहता है।

इसलिए यह प्रसंग भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं। सभी जानते हैं, आतंकवादी बहुत कुछ कर सकता है। सिर में दर्द, माथे में घुमेर, जबान का सूखना, जिगर का रूठना। वैसे तो स्वयं जिम्मेवार हूँ। रात को कम सोती हूँ तो इसकी बाकायदा सजा पाती हूँ।

आरण्या और ईशान दोनों हँसते रहे।

इसका इलाज प्राकृतिक चिकित्सा में कुछ और भी है। गाँधी इसे अकसीर मानते थे। शहद और नीबू हैं। अंकुरित दालें हैं। भीगा और भुना दलिया।

बस ईशान, इस सब को जुटाने के लिए मेरे पास धीरज नहीं।

आरण्या हँसने लगी।

मैं दलिये का डिब्बा खोलती हूँ। बंद कर देती हूँ और सूजी भूनकर शीरा बना लेती हूँ।

आपको दलिया बनाकर खिलाऊँगा।

भला क्या कुछ डालते हैं उसमें!

मुनक्के, छुहारा, इलायची, दालचीनी, मगज और बादाम। अगर कल सुबह नाश्ते पर बनाया तो आप तक पहुँचाऊँगा। नहीं तो परसों!

धन्यवाद ईशान! इन्तजार करती रहूँगी। फिर मुलाकात होगी।

ईशान मुस्कराए।

आरण्या कुछ ऐसे कह रही है जैसे जानती हो कि मुलाकात निश्चय ही होगी। होने को नहीं भी हो सकती।

पाँच

कोई भी दिन ऐसा हो सकता है जब हम एक-दूसरे को न पाएँ।

आरण्या के माथे पर तेवर उभर आया।

हँसते-हँसाते क्या जरूरी है कि निराशा की तरंगें एक-दूसरे की ओर फेंकते जाएँ।

सुनो, आरण्या, सुनो!

आरण्या जा चुकी थी।

हफ्तों बाद ईशान आ रहे थे।

घंटी बजी। दरवाजा खुला। आइए।

आप कैसे हैं!

और आप!

ठीक हूँ। धन्यवाद।

क्या बात है—घर बहुत खामोश लग रहा है!

टी.वी. ऑन नहीं, और न ही संगीत।

ईशान जैसे परदों में घिरी दीवारों पर कोई इबारत ढूँढ़ने लगे हों।

आरण्या बोली—हम लोग अकेले रहते हैं तभी इस मौन का पाठ सुन सकते हैं।

क्या अकेलापन महसूस करती हैं?

नहीं। इतना जरूर कि कभी बाहर से घर पहुँचती हूँ तो हाथ-पाँव धो, कपड़े बदलकर स्वयं चाय बना अपना स्वागत करती हूँ। यह तो मालूम ही है कि घर में कोई दूसरी आवाज नहीं। और हर वह आवाज जो मेरी नहीं, दूसरों की है। बाहर की है। ऐसे में टी.वी. मैत्री बुरी नहीं।

क्या यह स्थिति परेशान करती है!

नहीं, हर स्थिति का अनुभव और व्यक्त किसी-न-किसी रूप में अपने नए को खोजने लगा है। व्यस्त रखता है। विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि मैं कभी ऊबी नहीं।

फोन बजा।

आरण्या के कोई मित्र। सरसरी-सी आवाज में कुशल-क्षेम का साधारण आलाप।

जाने कैसे हम एक ही लीक पर खड़े-खड़े पुराने शब्दों को इस्तेमाल करते जाते हैं। अपनी इस भंगिमा पर कभी विस्मय होता है और कभी हँसी भी आती है।

आप दूरी की नजदीकी में विश्वास रखती हैं और घर-परिवार की कुल गाथाएँ मौन रखती हैं। क्या उन्हें हवा लगाना ठीक न होगा!

पारिवारिक घनिष्ठता से जी हुई पुरानी भाव-गठरी बेमानी हो चुकी है। शायद इसीलिए अपना पारिवारिक तानपूरा खामोश है।

परिवार की सुगंध इतनी भी नहीं सुहाती कि संगीत की लय-ताल की तरह हर क्षण दिल तक पहुँचती रहे।

आरण्या हँसती रही।

यह विरोधी दिशा का उपक्रम है। कुटुंब-कबीले का लंबा पाठ भूलकर सिर्फ शीर्षक को ही क्यों दोहराते रहें! उसके पार सभी कुछ सुखवर्द्धक नहीं है!

क्या सचमुच ऐसा किया जा सकता है!

मालूम नहीं। लगता है, विभिन्नताओं ने अब उस अधिकार को लील लिया है—उसका अभाव जरूर खल रहा होगा आपको!

अगर कहूँ नहीं तो आप मनोवैज्ञानिक गुत्थियों को कुरेदने लगेंगे! आज का सच यह है कि परिवार के ऊपरी ढाँचे की संगत और भीतरी तनावों से दूर यह शांत अब मुझे सुखकर लगता है।

ईशान जैसे चिंतित हो उठे हों।

पारिवारिक संबंधों की व्याख्या व्यक्तिगत संदर्भों से नहीं की जानी चाहिए।

आरण्या हँसी।

यह भी एक पूरा पुराण है। संयुक्त परिवारों में भी परिवार का स्वामित्व व्यक्ति की उत्पादक हैसियत से जुड़ा है। भाई-भतीजे सगेवालों के मुँह ताक रहे हैं कि तेवर कुछ ढीले पड़ें, गुस्सा छने तो शायद कुछ बात बने!

आरण्या, पारिवारिक संबंध गहरे होते हैं। छोटे-छोटे दबावों के बावजूद उनमें बहुत-कुछ अच्छा और मूल्यवान होता है।

आरण्या एक साथ उत्साहित और उत्तेजित हुई।

लंबी-चौड़ी गृहस्थी के पुराने मिथक भंग हो रहे हैं।

आप थोड़े-से संपन्न लोगों की बात कर रही हैं।

संयुक्त परिवार की गुणिता को तो हम फिर से खोज रहे हैं। हमारा देशगत संस्कार इसी की जड़ों में से पनपा है।

ईशान, मुझे संयुक्त परिवार का अनुभव नहीं। दूर-पास से जो इसकी आवाजें सुनीं, वह सुखकर नहीं थीं। इतना जानती हूँ कि परिवार की सुव्यवस्थित अस्मिता और गरिमा का मूल्य भी उन्हें ही चुकाना होता है जिनका खाता दुबला हो। परिवार की साँझी श्री पैसे के व्यापारिक प्रबंधन में निहित है। उसकी आंतरिक शक्ति क्षीण हो चुकी है। घनी छाँह की जगह घिसी हुई पुरानी चिंदियाँ फरफरा रही हैं। जानती हूँ ईशान, आपको यह बात ठीक नहीं लग रही, पर मैं अपनी कीमत पर इसकी पड़ताल कर रही हूँ और 'सत्य' के नाम-रूप में संचारित छोटे-बड़े झूठ और झूठों से बनाए गए स्वर्णिम सत्यों की ठोक-पीट ही इस सात्विक संस्कार की प्रेरणा है।

अकेले होने से ही क्या आप इसके विरोध में नहीं बोल रहीं!

नहीं ईशान, जिस वर्ग की कामकाजी लड़की की बात मैं कर रही हूँ—उसमें की हजारों-हजारों लड़कियों की पहचान इस एक आवाज में शामिल है। इसके सामान्य गुण और अवगुण दोनों ही उभरकर आपको चौकस कर रहे हैं। विश्वास करें कि यह मात्र विरोध नहीं—न किसी के विरुद्ध टक्कर लेने की मुद्रा है! समाज में जो घटित है—घट रहा है, उसे नजदीक से देखने की कोशिश-भर है यह।

आरण्या, कुछ तो समझ रहा हूँ आपकी बात, फिर भी कहूँगा कि इसकी पड़ताल तटस्थता से की जानी चाहिए।

आरण्या ने तीखे व्यंग्य से कहा—सुनने में ऐसा लग रहा है जैसे मैं और आप दोनों बड़े-बड़े परिवारों के कर्ता हैं। लड़के-लड़कियाँ, नाती-पोते। उनके पोषण-प्रसंग। लड़कों के धंधे-नौकरियों के ग्राफ, दामादों की पदोन्नति, रसूख और उपलब्धियाँ—यहाँ तो यह पूरा तंत्र-मंत्र गैरहाजिर है! आप घर के खामोश होने की बात कर रहे थे न, उसकी वजह यही होनी चाहिए!

समझ रहा हूँ। परिवार की दूरी आपको उदासी से दूर रखती होगी।

हाँ। अगर कहूँ कि मैं अपनी खुद की निकटता में, सोहबत में कभी उदास नहीं होती तो ज्यादा सही होगा।

ईशान व्यंग्य से हँसे।

अद्‌भुत!

ईशान अद्‌भुत कुछ भी नहीं है। इतनी-सी समझ, इतना-सा जान लेना काफी है कि जिस दृश्य में, घटना में आपकी साझेदारी नहीं—आप उसके बाहर हैं!

संग-साथ रहता परिवार तो खुली किताब है। आपसदारी का रख-रखाव ही इसका पुख्ता प्रमाण है। इसके सगेपन को कोई पराया नहीं छीन सकता!

इस निकटता और दूरी के बीच तीसरा होने के अनुभव भी अनेकों प्राप्य हैं ईशान!

कैसे!

परीक्षा में बच्चे के नंबर कम आए—आप दोषी हैं क्योंकि परीक्षा के लिए जाते हुए आगे से आप मिल गए थे। बेटे को मनचाहे स्कूल में दाखिला नहीं मिला। आपकी जिज्ञासाएँ आड़े आ गईं। कंपीटीशन में पिछड़ गए बच्चा या बच्ची तो जरूर उसकी नजर लगी है जो त्रिशंकु है। न इधर का न उधर का। बीच में लटका हुआ। किसी की नौकरी का जिक्र कर दिया और वह सफल न हुआ—तो गुनाह उसी के मत्थे जो कहीं का नहीं! बताइए ऐसे प्रगाढ़ रिश्तेदारों को कैसे सहन करेंगे आप! आप में इतनी ही दिलचस्पी कि आप उनकी दहलीज के अंदर खड़े हों तो उन्हीं की ओर देखा करें, बाहर हों तो उन्हें न भूलें।

आरण्या, मेरे अपने आस-पास कोई नहीं। शायद इसीलिए आपसे पूरी तरह सहमत नहीं हो पा रहा। चेष्टा कर रहा हूँ आपके कोण को देखने-बूझने की।

परिवार की साँझी श्री संपदा और संपन्नता में निहित है! आप इस साँझेपन के हिस्सेदार हैं तो स्नेह, ममता भी प्रचुर होंगी। नहीं तो—

क्या आप पुत्रियों की ओर से तो यह नहीं कह रही हैं!

नहीं ईशान, आख्यान और उपाख्यान का फर्क मेरा निज का अनुभव नहीं। मैं तो इतना जानती हूँ कि बेटा हो, बेटी हो, परिवार के हर सदस्य को इच्छा-अनिच्छा, उदासी-उल्लास को मनचाहे रूप से रूपांतरित करने का अधिकार है।

ठीक कह रही हैं पर हम यह न भूलें, परिवार सुरक्षा का एक नीड़ है, और एक-दूसरे को सहारा देनेवाली एक घनी छाँह भी। जीवन भी एकवर्णी नहीं।

ईशान, जो संरक्षण आत्मविश्वास को कुरेदता चले उसे सराहने में क्या तुक है भला!

नहीं-नहीं—परिवार की चौखट में जो पनपता-उभरता है वह सामंजस्य भी तो मानवीय संबंधों के लिए जरूरी है।

आरण्या इतराने लगी, मानो अभिनय करती हो।

हाँ, वह भी एक दिलचस्प स्थिति है। गए बरस हम अमरीका गए थे। बड़े के पास। उससे पहले लंदन मँझली बहू के यहाँ। उसका दूसरा बच्चा पहुँचनेवाला था। बेटी ने बुलाया तो उसके पास चले गए।

एक-दूसरे की जरूरत बनी रहनी चाहिए। यह बुरी बात नहीं।

ईशान ने एक अनमनी निगाह से देखा।

अकेले होने से ही क्या इस स्थिति को ऐसे देखना उचित है!

नहीं। प्यार, सद्भावना जैसे शब्दों में मेरी कभी अनास्था नहीं हुई। इसी से मेरी सोच नकारात्मक नहीं है। हाँ, मैं संदेहों के पार देखने की आदी जरूरी हूँ।

सोचिए, एक बच्चा सुख दे रहा है। दूसरा ढिठाई से दुःख और तीसरा सुनहले भविष्य की ओर अग्रसर है। किसी का मुंडन, किसी का विदेश-प्रस्थान और इसके विपरीत सभी पात्रों का अभिनय एक ही व्यक्ति में हो तो घर में टी. वी. के शोर के अलावा किसकी उम्मीद करेंगे हम। शोर के पिछवाड़े का एकांत भी कैसे हमें बहकाएगा!

ईशान और आरण्या दोनों मिलकर हँसने लगे!

वक्त की कमी नहीं—अब क्या परिवार के बेटे-बेटी की ओर मुड़ें।

मानवीय मन के आवेग और आवेश को परिवार ही नियंत्रित करता है। असंख्य डोरों से वह समाज से जुड़ा है। इसी में रहकर स्त्री-पुरुष दोनों अपनी-अपनी अंतःशक्तियों को विकसित कर सकते हैं।

क्या दोनों की अंतःशक्तियाँ एक-दूसरे से भिन्न हैं!

आपके व्यंग्य की धार को चमकते देख रहा हूँ। दिलचस्प है कि आपकी हर बात, हर बार बाहर की ओर बढ़ती है।

और आपकी—मन से अंतर की ओर—अंतर से आत्मा की ओर! क्या ठीक कह रही हूँ।

गलत नहीं है!

मेरी अंतरध्वनि मुझे संकेत देती है कि नदियाँ हमारी सखियाँ हैं! उद्गम से छूटती हैं—तो भागने लगती हैं। पर्वत-पठारों की तरह सिर उठाए वहीं एक जगह जमी नहीं रहतीं!

क्या पितृ-मुद्राएँ आपको परेशान करती हैं!

हाँ और न, दोनों ही। प्रकृति के यह दो मूल पक्ष अब आगे-पीछे नहीं, आमने-सामने खड़े हैं, ताकि साथ-साथ कदम मिला सकें। मात्र अनुकरण और नेतृत्व से ही नहीं—एक-दूसरे की बराबरी में। साँझेपन में।

भारतीय संस्कार आत्मा की बात करता है, आरण्या!

आरण्या हँसने लगी।

आत्मा का आत्मन् अब उत्तर-आधुनिक हो गया है। अब वह भी भारतीय दर्शन के साथ सुख-संपन्नता की खरीदारी करना चाहता है।

आरण्या किधर खींच रही हैं संक्रमण की इस बात को।

उधर ही जिधर आधुनिकता हमें ले जा रही है।

एक अपरिवर्तनशील गहन जीवन के सब परिवर्तनों के पार फैला रहता है, आरण्या। हम मानव प्रकृति और विज्ञान के साथ-साथ इस भूतल पर जीए चले जाएँगे। पहाड़, नदियाँ, सागर—सब एक-दूसरे की संगति में रहते रहेंगे।

ईशान, क्या पितृ-पक्ष खड़ा रहेगा। मातृ-पक्ष बहता रहेगा। हाँ, स्त्री के ब्रह्म-विद्या अधिकार का क्या होगा।

इस आत्मतत्त्व की सीमाएँ वह लाँघ भी सकेगी कि नहीं। कहा जाता है, दर्शन जैसे गूढ़ विषय स्त्रियों के लिए नहीं हैं।

नहीं। ब्रह्म को प्राप्त करने की शक्ति हर किसी के भीतर से आती है। स्त्री हो या पुरुष!

ईशान के माथे पर तेवर उभर आया।

आरण्या ने दिलचस्पी से देखा और मुलायम आवाज में कहा—

आपके टहलने का वक्त हो रहा है। मौसमी का एक-एक गिलास हो जाए तो कैसा!

क्यों नहीं!

चार मौसमियाँ, प्लेट, छुरी जूसर के पास रख दिए गए।

ईशान मौसमी काटने लगे—निमग्नता और कठोरता से।

आरण्या कुछ देर हाथों की ओर देखती रही, फिर हल्की आवाज में छेड़छाड़ की—मैं अगर आरक्षणवाली किसी वती या कुमारी की तरफ से रस निकालने की इस क्रिया का अवलोकन कर प्रेस को भेजूँ तो कहना होगा कि आपकी इस क्रिया में आपके जातीय प्राचीन स्मृति के पुनीत और कठोर भाव ही प्रदर्शित होते हैं!

क्या मतलब!

आरण्या हँसने लगी।

ईशान कुछ अविश्वास और कुछ रुखाई से देखते रहे।

यही कि रस निकाल लो और छिलके फेंक दो।

यह मैं अपनी ओर से नहीं कह रही, जो आरक्षण माँग रहे हैं, यह उनकी धारणा है।